OUR PUBLICATIONS

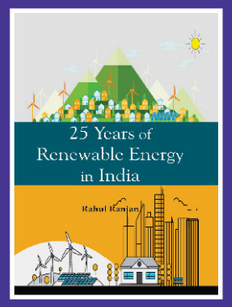

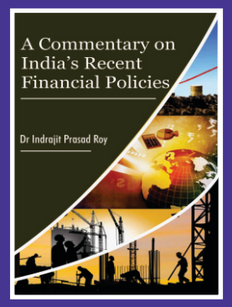

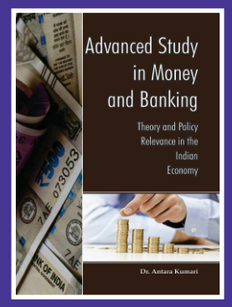

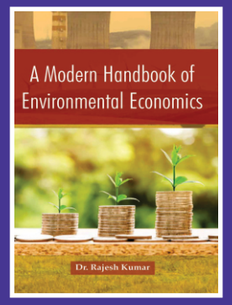

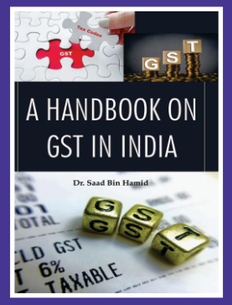

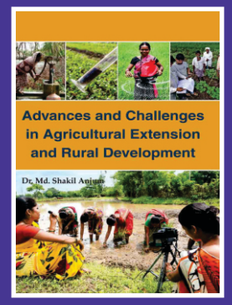

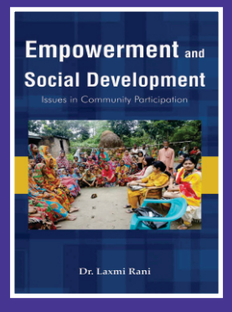

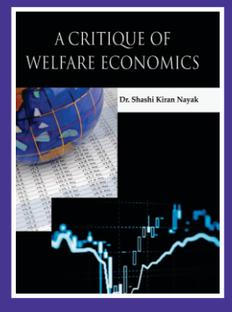

Iobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 2 मार्च-अप्रैल 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

प्रो. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 13 अंक : 2 ❑ मार्च-अप्रैल, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

आज कोरोना वायरस, जिसे चीनी या वुहान वायरस भी कहा जा रहा है, ने लगभग पूरी मानवता को अपनी चपेट में ले लिया है। इस महामारी के कारण मरने वालों की भारी संख्या के कारण इस वायरस से संक्रमित लोगों में ही नहीं, जो लोग संक्रमित नहीं है, उनमें भी खतरा बढ़ता जा रहा है। स्वास्थ्य सुविधाएं, महामारी के सामने बौनी पड़ती दिखाई दे रही है। ऐसे में अस्पतालों में बेड, आईसीयू, वेंटीलेटर का तो अभाव है ही, सामान्य स्वास्थ्य उपकरणों जैसे ऑक्सीजन, दवाइयों, स्वास्थ्य कर्मियों आदि की भी भारी किल्लत का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि सरकार ने बेड, दवाइयों, ऑक्सीजन की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु प्रयास किए हैं, लेकिन वर्तमान त्रासदी के समक्ष वे प्रयास बहुत कम है। कम ज्यादा मात्रा में इसी प्रकार की स्थिति का सामना अमेरिका, इंग्लैंड, इटली, ब्राजील जैसे देश पहले से ही कर चुके हैं या कर रहें हैं।

भारत में भी इस प्रकार की त्रासदी में लोगों की मजबूरी का लाभ उठाकर मुनाफा कमाने वाले लोगों की कमी नहीं है। हम सुनते हैं कि दवाइयों, ऑक्सीजन, ऑक्सीमीटर आदि के विक्रेता ही नहीं, बल्कि अस्पताल भी मुनाफा कमाने की इस होड़ में शामिल हो चुके हैं। जनता के संकट, इस मुनाफाखोरी के कारण कई गुना बढ़ चुके हैं। इन संकटों से समाधान का एक ही रास्ता है कि जल्द से जल्द इन स्वास्थ्य सुविधाओं को पुख्ता किया जाए और इलाज हेतु साजो-सामान और दवायों को पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराया जाए।

जहां तक दवाइयों की कमी, उनकी ऊंची कीमतों और उससे ज्यादा मुनाफाखोरी का सवाल है, उसके पीछे देश के व्यापारियों की जमाखोरी से कहीं ज्यादा वैश्विक बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एकाधिकार है। पेटेंट और अन्य बौद्धिक संपदा अधिकारों के कानूनों के कारण दवाइयों और यहां तक कि स्वास्थ्य उपकरणों आदि में भी इन कंपनियों का एकाधिकार स्थापित है। इन कानूनों के चलते इन दवाइयों और उपकरणों का उत्पादन कुछ हाथों में ही केंद्रित रहता है, जिससे इनकी ऊंची कीमतें यह कंपनियां वसूलती है। हाल ही में हमने देखा कि रमदेसिविर नाम के टीके की कीमत 3000 रुपए से 5400 रुपए थी जिसे भारत सरकार ने नियंत्रित तो किया, लेकिन उसके साथ ही उसकी भारी कमी भी हो गई। इसके चलते इन इंजेक्शनों की कालाबाजारी हो रही है और मरीजों से इंजेक्शन के लिए 20 हजार से 50 हजार रू. की कीमत वसूली जा रही है। यही हालत अन्य दवाइयों की है, जिसकी भारी कमी और कालाबाजारी चल रही है।

ऐसा नहीं है कि भारतीय कंपनियां इन दवाइयों को बनाने में असमर्थ है, लेकिन चूँकि वैश्विक कंपनियों के पास इन दवाइयों का पेटेंट है, वे अपनी मर्जी से अन्य कंपनियों (भारतीय या विदेशी) को लाइसेंस लेकर इन दवाइयों का उत्पादन करवाती है और इस कारण इन दवाइयों की भारी कीमत वसूली जाती है।

क्या है समाधान?

यह सही है कि इन दवाइयों के पेटेंट इन कंपनियों के पास है लेकिन फिर भी भारत सरकार वर्तमान महामारी से निपटने हेतु प्रयास कर न केवल इन दवाइयों के उत्पादन को बढ़ा सकती है, बल्कि कीमतों में भी भारी कमी कर लोगों को राहत दे सकती है। गौरतलब है कि पेटेंट से जुड़ी इस प्रकार की समस्या डब्ल्यूटीओ बनने से पहले नहीं थी। देश में सरकार किसी भी दवाई के उत्पादन हेतु लाइसेंस जारी कर उसके उत्पादन को सुनिश्चित कर सकती थी। इस कारण भारत का दवा उद्योग न केवल भारत में बल्कि विश्व भर में सस्ती दवाइयां उपलब्ध करा रहा था। 1995 में विश्व व्यापार संगठन के बनने के साथ ही ट्रिप्स (व्यापार सम्बन्धी बौद्धिक सम्पदा अधिकार) समझौता लागू हो गया था। इस समझौते में सदस्य देशों पर यह शर्त लगाई गई थी कि वह पेटेंट समेत अपने सभी बौद्धिक संपदा कानूनों को बदलेंगे और उन्हें सख्त बनाएंगे (यानी पेटेंट धारकों कंपनियों के पक्ष में बनाएंगे)। इस समझौते से पहले भी इसका भारी विरोध हुआ था, क्योंकि यह तय था कि इस समझौते के बाद दवाइयां महंगी होगी और जन स्वास्थ्य पर खतरे में पड़ जाएगा।

ऐसे में जागरूक जन संगठनों और दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राजनेताओं के प्रयासों से विश्व व्यापार संगठन और अमीर मुल्कों के दबाव को दरकिनार करते हुए भारत ने पेटेंट कानूनों में संशोधन करते हुए जन स्वास्थ्य से जुड़ी चिंताओं का काफी हद तक निराकरण कर लिया था। हालांकि प्रक्रिया पेटेंट के स्थान पर उत्पाद पेटेंट लागू किया गया और पेटेंट की अवधि भी 14 वर्ष से बढ़ाकर 20 वर्ष कर दी गई थी, लेकिन उसके बावजूद जेनेरिक दवाइयों के उत्पादन की छूट पुन:पेटेंट की मनाही, अनिवार्य पेटेंट का प्रावधान, अनुमति पूर्व विरोध आदि कुछ ऐसे प्रावधान भारतीय पेटेंट कानून में रखे गए थे, जिससे काफी हद तक जन स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों का समाधान हो सका। लेकिन इन सबके बावजूद अमेरिका समेत अन्य देशों की सरकारों ने भारत पर यह दबाव बनाए रखा कि भारत अपने पेटेंट कानूनों में ढील दे और अपने पास उपलब्ध प्रावधानों का न्यूनतम उपयोग करे।

अनिवार्य लाइसेंस

संशोधित भारतीय पेटेंट अधिनियम (1970) के अध्याय 16 और ट्रिप्स प्रावधानों के अनुसार अनिवार्य लाइसेंस दिए जाने का प्रावधान है। अनिवार्य लाइसेंस से अभिप्राय है सरकार द्वारा जारी लाइसेंस यानी अनुमति जिसके अनुसार किसी उत्पादक को भी पेटेंट धारक की अनुमति के बिना पेटेंट उत्पादन को बनाने, उपयोग करने और बेचने का अधिकार दिया जाता है। इसका मतलब यह है कि वर्तमान में कोविड-19 से संक्रमित व्यक्तियों के लिए उपयोग की जाने वाली

दवाइयों यानी रमदेसिविर और अन्य दवाओं के संदर्भ में यदि सरकार अनिवार्य लाइसेंस जारी कर दे तो भारत का कोई भी फार्मा निर्माता सरकार द्वारा निधारित राशि (जो अत्यंत कम होती है) पेटेंट धारक को देकर उन दवाइयों का उत्पादन देश में करके। उनको इस्तेमाल और बेच सकता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि पेटेंट कानून की धारायें 92 और 100 वैक्सीन हेतु अनिवार्य लाइसेंस जारी करने के लिए उपयुक्त है। सरकार स्वेच्छा (सूओमोटो) से 'राष्ट्रीय आपदा' अथवा 'अत्यधिक तात्कालिकता' के मद्देनजर गैर व्यवसायिक सरकारी उपयोग के लिए इन धाराओं का उपयोग करते हुए अनिवार्य लाइसेंस जारी कर सकती है।

गौरतलब है कि ये कंपनियां महामारी के बढ़ते प्रकोप से मुनाफा कमाने की फिराक में है और अमेरिका सरीखे देशों की सरकारें इन दवाओं और वैक्सीन की जमाखोरी के माध्यम से विकासशील और गरीब देशों के शोषण की तैयारी कर रही है। हाल ही में भारत में वैक्सीन उत्पादन हेतु आवश्यक कच्चे माल की आपूर्ति में अमेरिका सरकार ने अड़ंगा लगाया था और अपने पास जमा की वैक्सीन को भारत समेत दूसरे देशों को भेजने पर रोक लगा दी थी। बाद में अंतरराष्ट्रीय और घरेलू दबाव के कारण उन्हें यह रोक हटानी पड़ी।गिलिर्ड कंपनी द्वारा रमदेसिविर टीके की भारी जमाखोरी के समाचार भी आ रहे हैं। ऐसे में भारत में इन दवाओं और वैक्सीन उत्पादन हेतु अनिवार्य लाइसेंस लागू करना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

हालांकि भारत सरकार ने दक्षिणी अफ्रीका के साथ मिलकर विश्व व्यापार संगठन में भी ट्रिप्स प्रावधानों में छूट हेतु गुहार लगाई है, लेकिन अमेरिका, यूरोप और जापान जैसे देशों ने उसमें भी अड़ंगा लगा दिया है। ऐसे में सरकार को अपने सार्वभौम अधिकारों का उपयोग करते हुए ये अनिवार्य लाइसेंस तुरंत देने चाहिए, ताकि महामारी से त्रस्त जनता को कंपनियों के शोषण से बचाया जा सके। गौरतलब है कि विश्व व्यापार संगठन के दोहा मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में बौद्धिक सम्पदा (ट्रिप्स) एवं जन स्वास्थ्य से संबंधित एक राजनीतिक घोषणा स्वीकृत की गयी जिसमें सरकारों के इस सार्वभौम अधिकार को मान्य किया गया कि किसी भी आपातकाल अथवा अत्यधिक तत्कालिकता की स्थिति में सदस्य देशों को अधिकार है कि वह ट्रिप्स के प्रदत्त बौद्धिक संपदा अधिकारों को दरकिनार करते हुए जन स्वास्थ्य की रक्षा कर सकें। इस घोषणा द्वारा सदस्य देशों को "राष्ट्रीय आपातकाल या अत्यधिक तात्कालिकता की अन्य परिस्थितियों का निर्धारण करने के लिए अनुमति दी गयी है, कि यह सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट है"। दिनांक 30 अप्रैल 2021 को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने भी केंद्र सरकार से पूछा है कि कोरोना से संबंधित दवाओं के लिए अनिवार्य लाइसेंस लागू करने हेतु सरकार क्यों नहीं सोच रही?

संपादक

इस अंक में

जयशंकर प्रसाद जी का जीवन दर्शन–शशि कपूर; डॉ० अजय मिश्र 1

नागार्जुन के काव्य में सामाजिक वर्ग चेतना का स्वरूप–विनोद कुमार; डॉ० अजय मिश्र 4

हिन्दी साहित्य में गीतों का संवेदना पक्ष–मोहन बैरागी; डॉ० अवनिश अस्थाना 8

प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020–अभिषेक सिंह; डॉ० श्रीप्रकाश मिश्र 13

आधुनिक समाज-दृष्टि और निर्गुण काव्य–हेमंत कुमार 16

'दृश्य से अदृश्य का सफर में व्यक्त मनोवैज्ञानिकता'–प्रो० शर्मिला सक्सेना 19

प्राचीन भारत में दण्ड-व्यवस्था का स्वरूप–कुंवर विक्रम सूर्यवंश 23

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित स्त्री–डॉ० राम किशोर यादव 27

भारत में पंचायती राज व्यवस्था: एक समीक्षात्मक अध्ययन–अरूण कुमार 31

संवेगात्मक परिपक्वता के सन्दर्भ में किशोरावस्था के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन–डॉ० अविनाश पाण्डेय 35

भारतीय शिक्षा में वेदों का महत्व–डॉ० भगवानदास जोशी 40

भारतीय स्वतंत्रता क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं का योगदान–डॉ० वाय. एम. साळुंके 44

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और महात्मा गांधी–मुकेश चन्द्र 47

भारत में दिव्यांगकता का सामाजिक अध्ययन–डॉ० खोमन लाल साहु; डॉ० अश्वनी महाजन 50

द्विवर्षीय बी. एड. पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन रायपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में –प्रियंका तिवारी; डॉ० प्रियंका रमेशराव डफरे 55

ओटीटी प्लेटफार्म की विषय वस्तु का उपयोग एवं संतुष्टि- सिरसा शहर के सन्दर्भ में एक अध्ययन–बेअंत सिंह; डॉ० रविंद्र ढिल्लो 57

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन–ज्योति विजय; डॉ० चंद्रकान्त शर्मा 65

साहित्य के बदलते परिदृश्य एवं संस्कृत-रचना–डॉ० उषा नागर 69

चन्द्रप्रकाश जगप्रिय रों कहानी-साहित्य: कथ्य आरो शिल्प–श्वेता भारती 72

फुर्सत, रचनात्मकता और उत्पादन संबंध–डॉ० ज्योति कुमारी 76

हिमाचल की कहानियों में अवसरवादिता और प्रशासनिक तंत्र में भ्रष्टाचार–डॉ० ममता 79

कक्षा-8वीं के गणित पाठ्यपुस्तक का अधिगम प्रतिफल के संदर्भ में अध्ययन–डॉ० ए० के० पोद्दार; सोनम तम्बोली 83

गोपाल कृष्ण शर्मा 'फिरोजपुरी' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व–पिंकी दहिया 90

पंचायती राज एवं ग्राम विकास–केदार साहु; प्रोफेसर अश्वनी महाजन 93

नारदीय पुराण और पाणिनीय शिक्षा में वेदांग स्वरूप का समीक्षात्मक अध्ययन–कुमुद कुमार पाण्डेय 97

विकास और राष्ट्रीय एकता में युवा समूह की भूमिका–डॉ० जयराम बैरवा 103

विश्वगुरु के रूप में भारत और नई सदी–डॉ० रामलाल शर्मा 106

कोविड-19 के संदर्भ में उच्च शिक्षा की चुनौतियां–डॉ० श्रीमती गीता शुक्ला 108

आधुनिक काल में हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य का महत्व–रघुनंदन हजाम 112

हमारे लोकप्रिय गीतकार कवि गिरिजा कुमार माथुर–डॉ० आर० के० पाण्डेय; चोवाराम यदु 115

मिथिलांचल की खास पहचान मखाना–डौली कुमारी; सुदीप कुमार 118

महात्मा बुद्ध कालीन भारत में जाति एवं वर्ण व्यवस्था एवं महात्मा बुद्ध का दृष्टिकोण–अमरीश कुमार 123

कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' के काव्य में अभिव्यक्त गाँधीवादी दर्शन–कुशल महंत 126

मुगल काल में पशु-पक्षी चित्रण : अकबर कालीन चित्रकला के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० शैलेन्द्र कुमार 129
निराला के काव्य में भारतीय संस्कृति–डॉ० भंवर लाल प्रजापत 132
संदेशकाव्य-परम्परा में 'मेघदूतम्' और 'संदेशरासक' : एक तुलनात्मक विवेचन–नर्मदा 138
तत्त्वार्थसूत्र में वर्णित जैन जीवन शैली द्वारा युगीन समस्याओं के समाधान–विकास जैन 141
भारतीय संस्कृति की रीढ़ जनक की बेटियां–डॉ० सविता डहेरिया 144
हरिसुमन बिष्ट के कथा-साहित्य में चित्रित दलित वर्ग–डॉ० नवीन चन्द्र 147
सूचना के अधिकार के क्रियान्वयन की प्रभावशीलता का स्तर: (रीवा के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ० अमरजीत कुमार सिंह; गोकरण प्रसाद कुशवाहा 151
दलित साहित्य और साहित्यिकता–कमल किशोर कण्डावरिया 157
मृदुला सिन्हा के कथा-साहित्य में वर्णित सामाजिक समस्याएँ–डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा; डॉ० सुमेधा शर्मा 159
रामनगर क्षेत्र का व्यापारिक महत्व: एक ऐतिहासिक अध्ययन–कु० सीमा 162
आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में कपिलधारा कूप योजना का हितग्राहियों के आर्थिक विकास में योगदान का अध्ययन (सरदारपुर तहसील के विशेष सन्द्रर्भ में)–डॉ० डुंगरसिंह मुजाल्दा 164
स्नातक स्तर पर सामान्य एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली प्राथमिकताओं एवं व्यक्तित्व शीलगुणों का अध्ययन–डॉ० पूर्णिमा नराणियां 174
छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण एवं नगरीय लिंगानुपात में असमानता–डॉ० आर०एन० यादव; प्रो. ए. श्रीराम 182
समकालीन लोकतांत्रिक समस्याओं के विभिन्न स्वरूप व समाधान–डॉ० आरती यादव 188
कोशी क्षेत्र में तालाब, चौर और मोईन की उपयोगिता एवं महत्व–डॉ० मो० रफत परवेज 191
अपना मोर्चा उपन्यास में वर्णित छात्र आन्दोलन–सुखबीर कौर 195
मुरिया जनजाति का परम्परागत शिक्षा केन्द्र: घोटुल–डॉ० बन्सो नुरूटी; पुरोहित कुमार सोरी 197
बुद्धकालीन स्त्रियों की राजनीति में भूमिका–डॉ० अजय कुमार सिंह 202
विजय दान देथा के कथा साहित्य में नारी–डॉ० विदुषी आमेटा; भूमिका 204
उच्च शिक्षा में छात्राओं की खेलों में सहभागिता की स्थिति का अध्ययन (छिन्दवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में) –कु० सायमा सरदेशमुख; डॉ० रवि कुमार 207
नागरिकों को लेकर राष्ट्रीय मुद्दों व नए मीडिया का अध्ययन (गुरूग्राम लोकसभा क्षेत्र के संदर्भ में)–हिमांशु छाबड़ा 211
माध्यमिक स्तर के विकासात्मक शिक्षा में समस्याएँ एवं संभावनाएँ –डॉ० शोभना झा; डॉ० संजीत कुमार साहू; डॉ० राकेश कुमार डेविड 216
आदिवासी जीवन संघर्ष और साहित्य–डॉ० ओम प्रकाश सैनी 219
कारावास की समस्या बनाम पीछे छूटे बच्चे–डॉ० रेखा ओझा 224
कृषि विकास एवं वित्तीय समावेशन में किसान क्रेडिट कार्ड की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० रतन लाल; डॉ० विवेक सिंह 229
दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते कदमों के बीच भारत की बदलती-पड़ोस की नीति–हिमांशु यादव 236
असगर वजाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त ''साम्प्रदायिकता''–माया देवी; डॉ० मृदुल जोशी 240
निजता एंव वर्तमान सूचना क्रांति: एक विश्लेषण–रूबीना; डॉ० कैलाश चन्द्र 244
झुग्गी झोपड़ी में निवासरत महिलाओं की समस्या (बिलासपुर शहर के विशेष संदर्भ में)–कु० आरती तिर्की; डॉ० ऋचा यादव 247
आर्यसमाज की हिंदी पत्रकारिता और स्वदेशी जागरण–विरेन्द्र कुमार 251
मौलाना अबुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचार–डॉ० बृजेश कुमार पाण्डेय 256
उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना–डॉ० विभा मिश्रा 259
अशिक्षा का जनजातीय जीवन पर प्रभाव और उसकी औपन्यासिक अभिव्यक्ति–डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय 262
आज भी शोषित है नारी–डॉ० आंचल श्रीवास्तव; सौ० प्रभा दुबे 265

बागेश्वर जनपद के ग्राम पुरड़ा की महिलाओं की सामाजिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–राखी किशोर 268
मूल्य शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में बौद्ध कालीन शिक्षा प्रणाली की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता–डॉ० ईश्वर चन्द्र त्रिपाठी; बिपिन कुमार 274
अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बालकों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन–शक्ति सिंह 277
परास्नातक स्तर के नगरीय एंव ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन –डॉ० प्रेमचन्द्र यादव; शिवाश्रेय यादव 280
बनते-बिगड़ते दाम्पत्य जीवन का दस्तावेज : एक पत्नी के नोट्स–डॉ० संजय भाऊसाहेब दवंगे 284
भावी व सेवारत शिक्षकों के जीवन मूल्य: एक अध्ययन–डॉ० चन्द्रावती जोशी 286
''अहिंसात्मक सत्याग्रह की सफल तकनीक और महात्मा गांधी"–डॉ० भूपेश मणि त्रिपाठी 292
ग्रामीण महिलाओं द्वारा स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रयोग–अनुराधा शर्मा 295
प्राचीन संस्कृत साहित्य में मूलाधार चक्र का निरूपण–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु. संजू नागर 299
छत्तीसगढ़ राज्य में रेशम उद्योग का रोजगार में योगदान: एक अध्ययन (कोरबा जिले के विशेष संदर्भ में)–होत्री देवी 302
मस्तिष्क गोलार्द्ध प्रबलता का पुरूष जिमनास्टिक खिलाड़ियों के मध्य वॉल्टिंग टेबल उपकरण पर प्रदर्शन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन –डॉ० मिलिन्द भान्देव 307
भूमि उपयोग एवं भूमि आवरण में परिवर्तन: मकराना शहर, राजस्थान का एक स्थानिक कालिक अध्ययन–निशा चौधरी; डॉ० रश्मि शर्मा 311
प्रेमचंद के कथा-साहित्य में सामाजिक परिस्थितियों की अभिव्यक्ति–डॉ० के० आशा 320
नारी अस्मिता का वैश्विक स्वरूप–मधु गुप्ता 324
मुगल काल में व्यवसायिक शिक्षा (1526-1707)–नेहा सिंह; डॉ० शशि सिंह 329
'रेणु' के नाम बड़ी बहुरिया का पत्र–गायत्री कुमारी 332
लोक साहित्य में अभिव्यक्त लोक संस्कृति (आदी जनजाति के संदर्भ में)–सुश्री उसुम जोडके 335
भारत में महिला कैदियों के अधिकारों का उल्लंघन: एक सामाजिक और वैधानिक विश्लेषण–फरजीन बानो; प्रो० सबीहा हुसैन 339
पश्चिमी कोशी मैदान और पर्यावरणीय संकट–डॉ० नवनीत 344
खाद्य पदार्थों के अपमिश्रण से मानव स्वास्थ पर असर–डॉ० प्रतिभा प्रिया 347
मौर्यकालीन राजनीतिक जीवन में धर्मनिरपेक्षता का वर्तमान में प्रासंगिकता–डॉ० रूबी कुमारी 349
कौटिल्य के शैक्षिक विचार का वर्तमान में प्रासंगिकता–डॉ० सरिता कुमारी 352
महात्मा गाँधी और ग्राम स्वराज की अवधारणा - वर्तमान संदर्भ में–डॉ० शारदा कुमारी 355
बिहारीगंज के स्थानीय स्वशासन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–श्रिया सुमन; डॉ० कल्पना मिश्रा 358
भारत में संविद सरकार की स्थिति - वर्तमान संदर्भ में–मधु कुमारी 361
बिहार में कृषि का आर्थिक परिदृश्य–ज्योति कुमारी 364
कोरोना काल में बीमा का महत्व–डॉ० प्रवीण कुमारी 367
महिला सशक्तिकरण और आरक्षण - एक अध्ययन–डॉ० स्वाति कुमारी 370
शिक्षा के क्षेत्र में दृष्टिबाधित छात्र-छात्राओं की स्थिति का अध्ययन–धीरज कुमार भारती; डॉ० आर० एन० शर्मा 372
छपरा नगर में साक्षरता का क्षेत्रीय वितरण: एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० संजय कुमार; शैलेन्द्र मालाकार 377
डॉ० शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में वर्णव्यवस्था के आर्थिक पक्ष का अनुशीलन–डॉ० उर्विजा शर्मा 380
ज्ञानरंजन की कहानियों में मानवीय संवेदनाओं की मौलिकता–अर्जुन यादव 383
मुगल साम्राज्य पर नादिरशाह के आक्रमण के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० मनोज सिंह यादव 386
हस्तकशीदाकारी: संस्कृति एवं परम्पराओं का संवाहक–डॉ० अवधेश मिश्र; अनीता वर्मा 390
एकादश एक रस राष्ट्र रस की कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान–डॉ० संजय कुमार सिंह 392
साम्प्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता–सुमन देवी 396

कुमाऊँनी संस्कृति के उल्लेखनीय तत्व–मो० नाजिम; डॉ० सेराज मोहम्मद 399
'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' 'तस्मादित्युत्तरस्य' 'स्वं रूपं शब्दस्याऽशब्दसंज्ञा' च त्रिषु सूत्रेषु विचार:–अंकित मनोड़ी 403
महाभारते वर्णित-राजधर्मस्य अनुशीलनंशान्तिपर्वण: परिप्रेक्ष्ये–डॉ० निवेदिता बैनर्जी 406
बिहार राज्य के ग्रामीण बेरोजगार युवकों को आर्थिक रूप से सबल बनाने में कौशल विकास योजना की भूमिका–मनोज कुमार साह 410
हिन्दी में आंचलिक उपन्यासों की परम्परा–डॉ० चिम्मन 413
भाषिक संवेदना के कवि रघुवीर सहाय–प्रतिभा देवी 416
'मुन्नी मोबाइल' में चित्रित लोकल और ग्लोबल परिदृष्य की उद्देश्यता–डॉ० सचिन मदन जाधव 420
महादेवी वर्मा: स्त्री-मुक्ति का स्वर–जागृति 423
शिव के विविध स्वरूपों का वर्णन–सीलू सिंह 426
कोरोना महामारी और बच्चों की शिक्षा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में - एक अध्ययन–डॉ० रंजना कुमारी झा 431
उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र का व्यापारिक महत्व का एक ऐतिहासिक अध्ययन: रामनगर के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० नीरज रुवाली; कु० सीमा 434
हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में नारी चरित्र–रोहित कुमार मिश्र 437
भारतीय सामाजिक सुधार आन्दोलन में ज्योतिवा फुले का योगदान–रितेश कुमार 440
कुंठा का व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन–डॉ० यतीन कुमार चौबीसा 444
बाल श्रमिकों का बाल श्रम के प्रति बोध–डॉ० वीरेन्द्र सिंह 448
अन्तर्राष्ट्रीय शांति के अनुरक्षण में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की भूमिका–सोमेश गुंजन 452
वर्तमान परिदृश्य में श्रीलाल शुक्ल का साहित्यिक यथार्थ–डॉ० प्रमोद कुमार सिंह; कैलाश नाथ यादव 456
दलित चेतना की अवधारणा–संगीता; डॉ० यशवन्त वीरोदय 459
शेक्सपीयर के नाटको का जयशंकर प्रसाद पर प्रभाव–डॉ० मनोज विद्यासागर 464
हिन्दी सिनेमा का बदलता स्वरूप–डॉ० नमिता जैसल 467
प्रेमचन्द की कहानी कला की समीक्षा–डॉ० प्रीति राय 470
हिन्दी के विकास में पं. माधवराव सप्रे का योगदान–डॉ० गौकरण प्रसाद जायसवाल 472
कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री-चेतना–एस कुमार गौर; डॉ० (श्रीमती) बी०एन० जागृत 476
छत्तीसगढ़ी लोकगीत ''पंथी'' में सामाजिक चेतना (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में)–मनीष कुमार कुर्रे; डॉ० चन्द्रकुमार जैन 479
प्राचीन भारत मुद्रा की उत्पत्ति, विकास एवं महत्व–पिंकी कुमारी 484
कक्षा 11-वीं के छात्रों की अध्ययन आदत का उनके शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के सम्बन्ध में शोध
–श्रद्धा श्रीवास; आनंद कश्यप 486
सिनेमा एवं पत्रकारिता का साहित्यिक योगदान–पूजा यादव 489
मथुरा स्थल का सांस्कृतिक अध्ययन: बौद्ध धर्म के विशेष संदर्भ में–मनीष कुमार 493
विज्ञानामृतभाष्यदिशा ब्रह्मण: स्वरूपविमर्श:–संदीप उनियाल 498
''बघेली भाषा एवं साहित्य'': एक अनुशीलन–डॉ० बृजेस धर दुबे 501
हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में आगमन चिंतन प्रतिमान की
प्रभावशीलता का अध्ययन–डॉ० सरोज जैन; विन्देश्वरी प्रसाद सिंह 504
भारत में महिला सशक्तिकरण: मुद्दे एवं चुनौतियाँ–डॉ० गिर्राज प्रसाद बैरवा 509
दलित साहित्य और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद–डॉ० सुषमा गौडियाल 512
श्री आयंगर का योग से स्वास्थ्य लाभ के प्रति दृष्टिकोण–डॉ० प्रियंका शुक्ला 515
ग्रामीण और शहरी महिलाओं के पोषण (बॉडी मास इण्डेक्स) का तुलनात्मक का अध्ययन–सरिता सोनकर; डॉ० जयप्रकाश सिंह 517
राष्ट्रवादी साहित्यकार आचार्य नीरज शास्त्री का हिंदी साहित्य को प्रदेय–डॉ० प्रेमचंद चव्हाण 521

संचार माध्यमों की भाषा–डॉ० रेणु गुप्ता 524
भारत की बहुलवादी संस्कृति के प्राचीन मूल–डा० पार्थ सारथी 527
वैज्ञानिक सोच: भारत की तात्कालिक आवश्यकता–डॉ० देवेन्द्र कुमार साहू 530
वर्तमान में ब्रिक्स की प्रासंगिकता–डॉ० मनीष कुमार साव 532
छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव परिणाम -2018 का राजनीतिक विश्लेषण–अमृतेष शुक्ला; राहुल सिंह 534
डॉ० अम्बेडकर के बौद्ध धर्म सम्बन्धी विचार–डॉ० पूरण मल बैरवा; रमेश चन्द 538
शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जीवन शैली का उनकी शैक्षिक समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन
–निशा बोहने; प्रोफेसर सिद्धार्थ जैन; डॉ० लखन बोहने 543
स्वयं सहायता समूह (SHG): ग्रामीण महिलाओं के लिए वरदान–नंदिता राय 547
उच्च शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी की प्रासंगिकता–डॉ० नीरज कुमार सिंह 551
वर्तमान समय में राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियाँ–डॉ० रूपम मिश्रा 554
समकालीन महिला कथा-लेखन में मैत्रेयी पुष्पा की उपलब्धियाँ–डॉ० कंचन यादव 558
सोशल मीडिया से उपजता मानवीय मूल्यों का संक्रातिकाल–प्रो० माला मिश्र 563
लोकमंगल की पत्रकारिता और वर्तमान चुनौतियां–डॉ० राकेश कुमार दुबे 568
ज्ञान युग के संदर्भ में अब्दुल कलाम का शैक्षिक चिंतन–कुमारी प्रिती भारती 571
बिहार राज्य में मधुबनी जिला के अंतर्गत राजनगर ब्लॉक में सन 2021 में अलग अलग कक्षा में विभिन्न श्रेणियों के
नामंकित बच्चे का भौगोलिक अध्ययन–जुली कुमारी 574
भारतीय सुरक्षा दृष्टि में भूटान की भू - रणनीतिक स्थिति का महत्व–सतीश कुमार 579
आधुनिक भारत के निर्माण में राजाराम मोहन राय का योगदान–डॉ० प्रियंका सिंह 583
छ०ग० के कोरबा जिले में कोयला खनन से प्रभावित ग्रामीण समुदाय के समाजिक विकास का अध्ययन
–डॉ० ऋचा यादव; सुनील कुमार 587
साहित्य दर्पण में वर्णित काव्य एवं काव्यपुरुष का स्वरूप कि प्रसांगिकता–डॉ० नरेन्द्र कुमार आर्य 593
समकालीन हिन्दी कविता–डॉ० बलराम गुप्ता 596
साठोत्तरी उपन्यासों में वैवाहिक जीवन–प्रो० रमेश के पर्वती 600
किन्नर केन्द्रित प्रमुख हिन्दी उपन्यासों की भाषिक सरंचना–ज्योति; डॉ० वीरेन्द्र सिंह यादव 605
नागार्जुन के कथा-साहित्य में अछूतोद्धार के प्रसंग–डॉ० मनोज कुमार 610
छपरा स्थित डच समाधि स्थल से प्राप्त मध्य कालीन स्थापत्यों का ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक सर्वेक्षण–डॉ० श्याम प्रकाश 612
प्रौढ़ व्यक्तियों के दबाव स्तर परप्रेक्षाध्यान के प्रभाव का अध्ययन–डॉ० निर्मला भास्कर; अनिल विश्नोई; डॉ० अशोक भास्कर 617
सरगुजा जिले के उराँव महिलाओं तथा बच्चों में कुपोषण एवं स्वास्थ्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन
(छ०ग० राज्य के सरगुजा जिले के विशेष संदर्भ में)–शबाना परवीन; श्रीमती डॉ० रीचा यादव 621
सूचना का अधिकार और सुशासन (भारतीय परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन)–आदित्य चतुर्वेदी 625
'पीढ़ियाँ' उपन्यास में साम्प्रदायिक अलगावाद और राष्ट्रवाद–संतोष कुमार भारद्वाज 628
छत्तीसगढ़ राज्य में सार्वजनिक वितरण प्रणाली का एक प्रशासनिक अध्ययन–डॉ० श्रीमती रीना मजूमदार; डॉ० प्रमोद यादव; बिसनाथ कुमार 632
भारत में किन्नरों की सामाजिक स्थिति–डॉ० नसरीन जान 636
पंचास्तिकाय समयसार : एक अनुशीलन–डॉ० पूजा राठी 638
असमीया ग्रामीण समाज में नामघर का स्थान–डॉ० जिनाक्षी चुतीया 642
प्रेमाख्यानक काव्यों की कथा के माध्यम से सूफी साधना की अभिव्यक्ति–डॉ० रंजय कुमार सिंह 645
लघु आवश्यकता, लघु ऋण व लघु उद्यम के माध्यम से गरीब महिलाओं का आर्थिक विकास–डॉ० रूबी सिन्हा 647

गाँधी दर्शन में तत्त्वमीमांसीय विचार: एक दार्शनिक अध्ययन–डॉ० रीतु कुमारी 651
आधुनिक युग में संगीत का स्वरूप–प्रीति सिंह 654
तिरूपति बालाजी मंदिर चित्तूर, आंध्र प्रदेश की सामुदायिक सहभागिता–आशुतोष पाण्डेय 656
चित्तौड़ का तीसरा साका (जौहर) और इसमें जयमल की भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० भगवान सिंह शेखावत 659
हवेली अथवा देवालय संगीत–प्रमोद कुमार 663
राजस्थानी भणतगीत और उसका माहात्म्य–डॉ० श्रवण राम 666
ऑनलाइन माध्यमों में सूचनाओं को खोजने की प्रक्रिया: एक विहंगावलोकन–डॉ० गौरीशंकर कर्मकार; डॉ० वर्षा रानी 671
क्षेत्रीय विकास में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों का योगदान (जनपद बागेश्वर के विशेष संदर्भ में)–चन्द्र प्रकाश सिंह 675
लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना–डॉ० प्रवीण देशमुख 680
चम्पारण में नील उत्पादन एवं किसानों की व्यथा–पिंकी कुमारी 685
माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के सफल शैक्षणिक अभ्यास : एक अध्ययन–डॉ० सरोज शर्मा; डॉ० प्रमोद जोशी 688
राजकपूर की फिल्मों में भारतीय समाज का चित्रण : 'जागते रहो' फिल्म के विशेष संदर्भ में–डॉ० आदित्य कुमार मिश्रा 693
समाजिक समावेशन और सतत् विकास के लिए गुणवता शिक्षा–रोहताश कुमार 698
महात्मा गाँधी और भारतीय राष्ट्रवाद:- एक समीक्षात्मक अध्ययन–संजय कुमार पासवान 703
संस्कृत छन्द रचना विधान में प्रयुक्त होने वाले सहायक तत्त्वों का विवेचन–पंकज शर्मा 706
उच्च माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन–डॉ० वंदना; मिथिलेश कुमार जैमिनी 710
भारत में रक्षा बजट की निर्धारण प्रक्रिया एवं आवंटन–राहुल कुमार 715
कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन–श्रीमती नूतन दूबे; डॉ० तृषा शर्मा 718
छत्तीसगढ़ में कृषि विपणन: समस्या व समाधान–डॉ० गिरजा शंकर गुप्ता 722
संसदीय प्रजातंत्र और गांधीय अवधारणा–डॉ० विकास यादव 726
भूमण्डलीकरण के युग में भारतीय नारी–डॉ० कमलेश कुमार सिंह 729
मुगल स्थापत्य कला: एक विशुद्ध प्रतिमान–प्रभात वर्मा 731
हिन्दी का वैश्विक विस्तार: रामकथा के संदर्भ में–डॉ० कृष्ण चंद रल्हाण 734
मैत्रेयी पुष्पा के औपन्यासिक रचनाओं में बुन्देलखण्डी संस्कृति का प्रभाव–हरिश्चन्द्र यादव; डॉ० वन्दना शर्मा 739
सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गो के मानव अधिकारों के संरक्षण के लिये राज्य मानवाधिकार आयोग, उत्तर प्रदेश की भूमिका : एक सामाजिक विधिक अध्ययन–कमल किशोर 742
नरेश मेहता की काव्य-भाषा दृष्टि–डॉ० कामना पण्ड्या 746
शीर्षक-परदेशी राम वर्मा के उपन्यास 'सूतक' में सामाजिक जागृति–डॉ० अभिनेष सुराना; कमल कुमार बोदले 750
प्रेमचंद के कथा-साहित्य में सामाजिक परिस्थितियों की अभिव्यक्ति–अनिल कुमार पाण्डेय 753
भारत में स्कूली शिक्षा: असमान पहूँच एवं सामाजिक असमानता का पुनरुत्पादन–अभ्यानंद 757
श्रीमद्भगवद्गीता में योगत्रयसमन्वय–डॉ० मधु बाला सिन्हा 760
समकालीन वैश्विक सुरक्षा और सामरिक परिदृश्य : भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में–डॉ० सुधीर कुमार 764
'कार्य संतुष्टि और शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण के संबंध में शिक्षक की प्रभावशीलता का अध्ययन'–डॉ० अमित कुमार 768
पाण्डुलिपिविज्ञानस्य संरचनात्मकं स्वरूपम्–डॉ० अनिल प्रताप गिरि 773
देश की आजादी में सतपुड़ा अचंल की जनजातियों की भूमिका–अरूण कुमार गोंडाने; डॉ० महेन्द्र गिरी 776
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्धों में लालित्य–डॉ० राधा भारद्वाज 782
जयपुर जिले में गिरते भूजल स्तर का कृषि उत्पादकता पर प्रभाव (2011 से 2020 के सन्दर्भ में)–अजीत सिंह; डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 788
मध्यकालीन कवियों द्वारा भक्ति एवं संगीत का प्रचार–प्रमोद कुमार; डॉ० ज्ञानेश चन्द्र पाण्डेय 795

राजनैतिक स्थितियॉ एवं सामन्तवाद के बदलते चेहरे; 'ढाई घर'–डॉ० ममता पन्त 798
पूज्य आचार्यप्रवर पं० बलवन्तराय भट्ट 'भावरंग जी' की महान् कृति 'भावरंग-लहरी' की उपादेयता–प्रीति सिंह; डॉ० ज्ञानेश चन्द्र पाण्डेय 801
भारत विभाजन की त्रासदी और हिन्दी कथा साहित्य–प्रीति देवी मौर्या 804
पुराने गया जिला के क्षेत्र में नक्सलवादी गतिविधि और हिंसा: एक ऐतिहासिक अध्ययन–सचिन कुमार 806
'सागर सीमांत' की महाकाव्यात्मकता–प्रो० दामोदर मिश्र 811
महिलाएं, उनके मानवाधिकार एवं विडम्बनाएं–तारा राम 816
भारतीय अर्थव्यवस्था में डिजिटल भुगतान का महत्व–डॉ० गुलाब फलाहारी 819
सहरसा जिला में लिंगानुपात सामयिक एवं स्थानिक वितरण का भौगोलिक अध्ययन–डॉ० धनंजय कुमार 822
कामकाजी तथा गैरकामकाजी महिला उपभोक्ताओं में प्रोसेक्ड पैकेज्ड भोज्य पदार्थों के क्रय पैटर्न का अध्ययन:
पटना शहर के संदर्भ में–कुमारी सुषमा श्रीवास्तव; प्रो० (डॉ०) अंजु श्रीवास्तव 828
रीतिकालीन साहित्य में ब्रज भाषा का योगदान–सुरेश चन्द्र पाल 831
मीरा बाई के काव्य में आध्यात्मिक चेतना का सौंदर्यीकरण–कृपा शंकर; डॉ० स्मृति शुक्ला 834
वर्त्तमान समय में सूचना – क्रांति की चुनौतियाँ–डॉ० आभा लता चौधरी 837
ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में स्वयं सहायता समूह की भूमिका- एक दृष्टि–अतिबला सिंह; प्रो० (डॉ०) अजय कुमार सिंह 839
वर्तमान समय मे शिक्षक की स्थिति–सुरक्षा गर्ग; डॉ० चंद्रकांत शर्मा 842
भारत में असंगठित क्षेत्रों के मजदूर एवं उनकी समस्याएं–बंकेश कुमार शर्मा; प्रोफेसर (डॉ०) एन०एल० गुर्जर 848
हिरासत में मौत एवं कैदियों के मानवाधिकार–राजेश कुमार त्रिपाठी; प्रोफेसर (डॉ०) एन०एल० गुर्जर 852
भारतीय प्रशासन और महिला अधिकार: एक नीति एवं विधि शास्त्रीय अवलोकन–डॉ० राजीव सागर; डॉ० अशोक कुमार 857
रंजना जायस्वाल की कविता में स्त्री संवेदना–डॉ० अनंत केदारे 863
मरण एवं गुणस्थान का अन्त: सम्बन्ध–श्रीमति अलका डागा 870
गिरमिटिया जीवन का संघर्ष सन्दर्भ 'लाल पसीना'–कोशिका शर्मा 875
प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री-पुरुष के उदात्त प्रेम का चरित्र-चित्रण–विनोद कुमार; डॉ० विजय कुमार पटीर 879
भारत में महिला सशक्तिकरण के दिशा में किये गये प्रयास की दशा व दिशा–डॉ० भूपेन्द्र कुमार 883
भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली में सुशासन में चुनौतियाँ–डॉ० राम नरेश टण्डन 886
ई-गवर्नेन्स: अवधारणा और महत्त्व–डॉ० अरूणा ठाकुर 889
विकास की अवधारणा व प्रशासनिक व्यवस्था महत्व–डॉ० (श्रीमती) अलकामेश्राम; डॉ० डी.एन. सूर्यवंशी; रामकृष्ण साहू 893
पूर्व मध्यकालीन भारत में दास प्रथा–डॉ० सुम्बुला फिरदौस 898
माध्यमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं के आत्मबोध के विकास में सांस्कृतिक एवं आध्यत्मिक मूल्यों की भूमिका
–डॉ० प्रेमपाल सिंह; नवदीप कुमार मौर्य 901
संगीत गायन के परिप्रेक्ष्य में आसन एवं प्राणायाम का सांगीतिक अवदान–डॉ० ज्ञानेश चन्द्र पाण्डेय 904
बढ़ता नगरीकरण एवं बदलता भू-उपयोग कोटपूतली नगर के संदर्भ में–संजय कुमार चौधरी; डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 907
दर्शन शास्त्र के स्तम्भत्रय (ज्ञानयोग तथा ज्ञानोपलब्धि के विशेष सन्दर्भ में)–उमेश कुमार; डॉ० अरुण कुमार सिंह 912
अरुणाचल प्रदेश की लोक कला : गोदना कला–डॉ० जमुना बीनी 917
दर्शनशास्त्र का समकालिक प्रकार्यात्मक संदर्भ–डॉ० मो० जियाउल हसन 922
नगरीयकरण का ग्रामीण अधिवासों पर प्रभाव (अलवर नगरीय क्षेत्र के सन्दर्भ में, 1981 से 2011)
–ऋषि प्रकाश शर्मा; डॉ० विजय कुमार गुप्ता 925
महाभारते वनपारिस्थितिक्या: मानवजीवने प्रभाव:–गौतम: 929
बेनीपुरी के ललित निबन्धों में लोक व समाज–मीनू पारीक 932

दलित चेतना एवं मोहनदास नैमिशराय : कहानियों के विशेष सन्दर्भ में–दाऊद अहमद परे; प्रो० दिलशाद जीलानी 936
रामदरश मिश्र कृत उपन्यास 'थकी हुई सुबह' का समीक्षात्मक अनुशीलन–डॉ० सायरा बानो 939
'वर्षा का संग्रहीत जल': लीलधर मंडलोई की कविता में प्रकृति की नैसर्गिक छवि–रंजीत सिंह 942
महिला कैदियों हेतु लिंग-विशिष्ट दृष्टिकोण एवं उपचार की आवश्यकता–डॉ० सुमन लता चौधरी 946
हठप्रदीपिका व धेरण्ड संहिता में प्राणायाम का स्वरूप–ज्योति शर्मा, प्रो० गणेश शंकर गिरी 949
रीतिकाव्य: एक पुनरावलोकन–डॉ० मुदिता तिवारी 953
आहत स्वर के दस्तावेज: दलित कहानियाँ (संदर्भ: हिन्दी साहित्य)–डॉ० कृपा किन्जल्कम् 957
वर्तमान भारत में किसानों की दशा और दिशा–डॉ० स्मिता 960
महात्मा गांधी के प्रेरणा स्त्रोत–डॉ० अखिलेश पाल 966
प्रतिरोध की राजनीति–प्रवीण कुमार यादव; डॉ० प्रभात रंजन 969
गाँधी दर्शन–डॉ० संजीत कुमार सिंह 972
भारतीय दर्शन में अस्तित्ववाद और मानवतावाद : राधाकृष्णन के विचारों की प्रासंगिकता–डॉ० रेशमा सुलताना 975
स्वतंत्रता कालीन भारत की राजनैतिक स्थिति और पत्रकारिता–डॉ० शंकर जी 978
राजस्थान में मतदाता व्यवहार एवं जाति–डॉ० शीतल मीणा; जगदीश प्रसाद मीणा 982
महात्मा बुद्ध के जीवन एवं बौद्ध धर्म के दर्शन -सिद्धांतों के विविध आयाम–रामेन्द्र कुमार 985
गाँधी का पर्यावरण दर्शन–डॉ० वर्षा रानी 990
उपभोक्ता आधारित अर्थव्यवस्था बनाम निवेश आधारित अर्थव्यवस्था–डॉ० संजीव कुमार सिंह 992
महाप्राण ध्वनि का किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन–मोनिका सेठिया; डॉ० युवराज सिंह खँगारोत 996
उच्च, मध्यम व निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन –अमरजीत सिंह; डॉ० डी० एस० सिंह बघेल 1002
मानवाधिकार और न्यायिक निर्णय–जितेन्द्र भारती 1009
धर्मनिरपेक्षता के भारतीय पहलू और भारतीय संविधान–डॉ० नागेन्द्र सिंह भाटी 1016
प्राचीनयन्त्रविज्ञानम्–मनु आर्या 1019
वरिवस्यारहस्यालोके निगमागमसाहित्यस्य आगमपरम्परया आलोचनम्–रविदत्त शर्मा 1024
शिक्षा के अधिकार को साकार करती शिक्षा नीति–अमित कुमार पाण्डेय; डॉ० राघवेंद्र सिंह 1029
पंचायती राज व्यवस्था के विकास में केन्द्र व राज्य सरकार की योजना की भूमिका–डॉ० डी०एन० सूर्यवंशी; संजय कुमार ध्रुव 1033
नवा रायपुर अटल नगर विकास प्राधिकरण के विकास की विभिन्न योजनाओं का अध्ययन–डॉ० (श्रीमती) रीना मजूमदार; डॉ० प्रमोद यादव; फैसल कुरैशी 1036
राज्य में प्रशासनिक एवं राजनीतिक व्यवस्था की अवधारणा का अध्ययन–डॉ० (श्रीमती) अलकामेश्राम; डॉ०डी.एन. सूर्यवंशी; दीपा 1039
अलवर जिले में महिला साक्षरता की दशा व दिशा–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 1043
योग और प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा–डॉ० प्रदीप कुमार; डॉ० सुरेन्द्रपाल सिंह 1047
तैत्तिरीयोपनिषद् में वर्णित शिक्षाध्यायवल्ली का स्वरूप–डॉ० योगिता मकवाना 1052
दलित महिलाओं के सशक्तिकरण में उच्च शिक्षा की भूमिका–आरती 1056
तकनीकी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन–दिव्या मिश्रा; डॉ० तृषा शर्मा 1059
नारीवादी चिंतन एवं भारतीय दर्शन–डॉ० उपासना सिंह 1061
प्रभा खेतान का काव्य-संसार–नम्रता 1065
सिरमौरी लोक संगीत की परम्परा–सुनील कुमार 1069
भारत की जाति व्यवस्था और अंबेडकर के विचार–तबस्सुम प्रवीण 1072

विधि एवं दर्शन: एक अध्ययन–डॉ० आलोक कुमार यादव 1074
तर्कशास्त्र के विचार के नियमों का आलोचनात्मक अनुशीलन–डॉक्टर अमित कुमार शुक्ल 1079
सामाजिकविकास योजनाओं की गति एवं विस्तार के प्रति अनुसूचित जातियों का दृष्टिकोण: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० राजेश कुमार 1081
वैदिक कालीन नारी शिक्षा व्यवस्था के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन–प्रज्ञा सिंह 1087
विद्यालयी पाठ्यक्रम में भूगोल शिक्षण का महत्व नई शिक्षा नीति: 2020 के संदर्भ में–दीपक कुमार; वन्दना सिंह 1092
पंचायती राज संस्थाएं एवं दलित महिलाएं: समस्याएं और चुनौतियां–श्वेता कुमारी 1096
सत्यकामाचार्य प्रणीत पद्यकृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० पटेल सिंह; मनीष शर्मा 1099
कमलेश्वर के उपन्यासों में नारी जाति के प्रति संवेदना–शिक्षा रानी; डॉ० राजेश कुमार 1104
विद्याभारती द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता का अध्ययन–डॉ० अरविन्द कुमार 1108
भारतीय इतिहास-लेखन में एकात्म मानववाद का बोध: एक नवीन दृष्टिकोण–डॉ० माया नन्द 1113
उत्तराखण्ड में पर्यटन व कोविड-19 से उत्पन्न चुनौतियां–कु० बबीता आर्या 1118
पं० दीनदयाल उपाध्याय का शिक्षा दर्शन एवं समसामयिक संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता–श्याम; डॉ० राजशरण शाही 1122
घरेलू हिंसा के विविध रूप–डॉ० कमलेश कुमार 1131
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का सृजनात्मकता का अध्ययन–कल्याण कुमार; डॉ० (श्रीमति) रेखा गुप्ता 1133
लोकधर्मी परंपरा में केदारनाथ सिंह–सुधांशु बाजपेयी 1138
भारतीय राष्ट्रवाद के परिप्रेक्ष्य में कुमाऊँनी शिल्पकार, सम्मान, हिस्सेदारी व प्रतिनिधित्व के लिए एक आंदोलन (1930 से 1935 ई0 तक) –गौरव कुमार 1143
उदय प्रकाश की कहानी मोहन दास में संकट ग्रस्त अस्तित्व–नेहा सिंह 1146
औपनिषदिक चिन्तन में परमतत्व की संकल्पना–डॉ० रश्मि यादव 1149
वर्तमान परिवेश में विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन–बृजेश सिंह 1153
कोविद-19 और प्रवासी महिला मजदूर : एक नारीवादी विश्लेषण–प्रोफेसर सबीहा हुसैन; डॉक्टर कोमल कुरील 1159
शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के क्रियान्वयन की चुनौतियां–अनिल कुमार 1165
वायुपुराण में दर्शन-तत्त्व–डॉ० गंगेश गुंजन 1168
भारतीय महिला उद्यमिता का विकास : स्थिती एवं संभावनाएं–डॉ० मदन जी. प्रधान 1171
संत रैदास की दृष्टि में हिन्दू राष्ट्र–राजेश कुमार यादव 1174
महिला सशक्तिकरण: दशा एवं दिशा–जितेन्द्र कुमार 1178
भारत-चीन सम्बंध के बदलते आयाम: एक विष्लेषणात्मक अध्ययन–इन्द्रजीत कुमार 1181
हिन्द महासागर में चीन की उपस्थिति एवं भारत की चुनौतियाँ–डॉ० रजनीश कुमार 1184
कौटिल्य के सिद्धान्तों की प्रासंगिकता भारत के विदेश नीति के सन्दर्भ में : (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)–डॉ० मो० इर्शाद अली 1189
उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन –रोहित तिवारी; डॉ० अस्मिता हट्टी 1192
हिन्दी महिला कथाकार सामान्य प्रवृतियां–डॉ० ईश्वर सिंह 1196
नाथ परम्परा एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य–प्रमोद; डॉ० रीतेश साह 1199
महाराष्ट्र में वीरशैव संप्रदाय का प्रचार–डॉ० अंबादास धर्मा केत 1202
सुरेंद्र वर्मा के नाटकों की प्रासंगिकता: एक अनुशीलन–प्रा. डॉ० संगिता उप्पे 1206
भैरव प्रसाद गुप्त के उपन्यासों में सामाजिक जीवन–अविनाश यादव 1211
अमेरिका में महिला श्रमिक की समस्या–डॉ० रवि प्रकाश यादव; निशित रंजन 1214
माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो के नैतिक मूल्यो का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० प्रमोद कुमार; सीमा कुमारी 1218
संचार माध्यमों में अभिव्यक्त विशिष्ट भाषाई पक्ष–डॉ० संदीप कुमार वर्मा 1221
शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन–डॉ० पंकज कुमार यादव 1224

प्राचीन भारत में गुप्तयुगीन सिंचाई व्यवस्था–डॉ० दीपा गुप्ता 1228
माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का विद्यालय एवं विद्यालय परिसर की स्वच्छता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन –डॉ० विजय शंकर यादव 1232
माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम की छात्र-छात्राओं की मानसिक सजगता एवं तार्किक योग्यता का अध्ययन–मनोज कुमार यादव 1236
जैव विविधता, संरक्षण और सतत विकास का समामेलन–भारतेन्दु चौधरी 1240
किशोरावस्था के समय आने वाली कुछ समकालीन विशेषताएं व विकास–प्रियंका; डॉ० निधि अवस्थी; डॉ० विक्रांत शर्मा 1242
उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालकों एवं बालिकाओं की जीवन शैली का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० भोपाल सिंह रावत; सुमन चौहान 1248
संविधान में संशोधन का विश्लेषणात्मक अध्ययन–डी० डी० मिश्रा 1253
महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयाम: उत्तर प्रदेश राज्य के विशेष सन्दर्भ में–डॉँ० सुशीला; कु० आरती 1256
बच्चों के विकास के वैयक्तिक, नैतिक, शैक्षिक, सामाजिक आदि आयामों पर पालन-पोषण की शैलियों के प्रभावों का विश्लेषण –डॉ० महमूद खान; मो० सैफ 1266
भारतीय सन्दर्भ में संसदीय शासन प्रणाली की सार्थकता-एक विवेचन–शार्दूल सिंह 1280
श्रमण परम्परा में ध्यान का स्वरूप–चन्द्रप्रभा कुमारी 1282
जैन धर्म का सांस्कृतिक विवेचन–डॉ० कुमारी उदिता 1285
भारतीय इतिहास में भगवान महावीर–डॉ० अरबिन्द कुमार सिंह 1287
वैदिक विचारग्रन्थि का उद्भेदन: भक्तिकुसुमांजलि–डॉ० विष्णुकान्त त्रिपाठी 1290
श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता–डॉ० मंजू मिश्रा 1297
गांधीवादी मूल्य दृष्टि और हिंदी साहित्य–डॉ० हनुमत लाल मीना 1299
इस्लाम में सामाजिक और आर्थिक न्याय की अवधारणा–डॉ० नसरीन बेगम 1302
रेडियो की स्वर्णिम यात्रा का सफर–हर्षवर्धन पाण्डे 1309
सामाजिक अभिप्रेरक का बाल अपराध पर प्रभाव: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन–कुमार सौरभ 1315
द्विवेदी युगीन कविता में राष्ट्रीय चेतना–डॉ. बाबूलाल धनदे 1317
बर्कले के दर्शन में नामवादी मत-एक विवेचनात्मक दृष्टिकोण–श्रुति शर्मा 1321
आश्रम व्यवस्था और पुरुषार्थ का सामाजिक महत्त्व–डॉ० पवन पाठक 1325
प्रधानमंत्री मुद्रा योजना व महिला उद्यमिता : एक समीक्षात्मक विश्लेषण–डॉ० महेंद्र त्रिपाठी 1330
उत्तराखण्ड की संस्कृति के संवर्धन एवं संरक्षण में शिल्पकार जाति का योगदान: एक ऐतिहासिक अध्ययन–महेश चन्द्र 1335
बौद्ध धर्म का शिक्षा में योगदान–राजीव त्रिपाठी 1338
कमलेश बख्शी की कहानियों में चित्रित धार्मिक चिंतन के विविध आयाम–डॉ० संजय विक्रम ढोडरे 1340
पारदर्शी सामाजिक निर्माण में ई-प्रशासन–अभय कुमार 1343
भारत में केंद्र राज्य संबंध: तनाव के कारण व सुझाव–डॉ० देवेन्द्र कुमार साहू 1348
दक्षिण-एशिया में चीन का बढ़ता प्रभाव और भारत: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–स्वीटी कुमारी 1351
ममता कालिया के कहानी साहित्य में नारी चेतना–प्रा० राजेंद्र ज्ञानदेव ननावरे 1355
कुरुक्षेत्र : मानवता का मूलमंत्र–डॉ० सुषमा चौबे 1359
भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंध: एक ऐतिहासिक विवेचन–डॉ० विनय कुमार पिंजानी 1363
शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों में श्रीमद्भगवद्गीता का उपयोग–विश्वजीत भारद्वाज 1366
दलित नारीवाद–डॉ० विशेष कुमार राय 1371
आदिवासी साहित्य के विविध विमर्श–रेनुका सरोज 1376
बैंकिंग सेवाओं का ग्रामीण विकास पर प्रभाव–विकास मौर्य; प्रो० विनोद कुमार पाण्डेय 1379
संघर्ष की राह पर आदिवासी साहित्य–डॉ० सुनील दत्त 1383

पंचायती राज व्यवस्था में महिला नेतृत्व-एक विमर्श–डॉ० के०एल० टाण्डेकर; डॉ० प्रदीप कुमार जाम्बुलकर; डॉ० आशा चौधरी 1386
विपणन व्यवस्था की प्रवृतियां-चुनौतिंया एंव समाधान–डॉ० के० एल० टांडेकर; डॉ० ई० व्ही० रेवती; कु० महिमा जोगनपुत्र 1390
चरित्र का समाज में योगदान तथा साहित्य के माध्यम से अमृतलाल नागर जी के कथा चरित्रों के प्रमुख पात्र एवं उनकी चारित्रिक विशेषता–रचना त्रिपाठी 1393
पी. बी. शेली के काव्य में प्रेम और सौंदर्य–प्रणीता किरण 1396
पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि में हिन्दू-मुस्लिम समस्या–रोशन कुमार सिंह 1398
पंजाब के पटियाला जिले में फूलों की खेती में उत्पादन की समस्या–जसप्रीत कौर 1401
ईस्ट इण्डिया कंपनी द्वारा चलाये गये सिक्कों का सामाजिक एवं धार्मिक तथा राजनैतिक अध्ययन–शैलेश गाँधी; प्रो० (डॉ०) दिनेश प्रसाद कमल 1404
अपभ्रंश साहित्य के चरित काव्यों में जम्बूसामिचरिउ का स्थान–राजीव कुमार; डॉ० दुधनाथ चौधरी 1408
पर्यावरण विमर्श : दशा और दिशा–बिजिना. टी 1411
राष्ट्रीय आंदोलन में राष्ट्रवाद की चेतना जागृत करने में रंगमंच और क्रांतिकारी साहित्य की भूमिका–भगत नारायण महतो 1414
हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक संवेदना–गोविंदराज के० 1416
स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता: लिंगभेद के संदर्भ में एक वर्णनात्मक अध्ययन–रेखा रानी; डॉ० सुनीता चौहान 1419
पंचायतीराज एवं ग्रामीण महिला सशक्तिकरण–कुमार राजीव रंजन 1426
किसानी विद्रोह का आरंभ -1875-76 (महाराष्ट्र के शिरूर परिवेश के संदर्भ में)–प्रा. हरिदास शंकर जाधव 1429
महिलाओं के खिलाफ अपराध की जांच में फॉरेंसिक वैज्ञानिक की भूमिका–रीना रानी जाट 1433
गठबंधन के दौर में स्थायित्व, क्षेत्रवाद, जातिवाद और दल-बदल की राजनीति एक अध्ययन–प्रिय रंजन 1437
भारत में उच्च शिक्षा–डॉ० बबिता बी० शुक्ला 1439
स्त्री दृष्टि का आलोचनात्मक अध्ययन–सुषमा रानी 1442
ममता कालिया के कहानी साहित्य में नारी चेतना–प्रा० राजेंद्र ज्ञानदेव ननावरे 1445
कमलेश बख्शी की कहानियों में चित्रित धार्मिक चिंतन के विविध आयाम–डॉ० संजय विक्रम ढोडरे 1449
पं.दीनदयाल आवास योजना का हितग्राहियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान (छत्तीसगढ़ के राजनांदगॉव जिलें के विशेष संदर्भ में)–रागिनी; डॉ० टाण्डेकर के०एल०; डॉ० भाटिया एच० एस० 1452
ग्रामीण महिलाओं की स्वास्थ्य समस्यायें : एक समाज शास्त्रीय अध्ययन (ग्राम चिराना जनपद कानपुर देहात के विशेष संन्दर्भ में)–दीपक कुमार गौतम; डॉ० महा लक्ष्मी जोहरी 1457
गुट-निरपेक्ष आन्दोलन तथा भारतीय विदेश नीति–प्रेरणा जैन 1461
अज्ञेय के कथा-साहित्य में वैज्ञानिक भाव-बोध–डॉ० सुरेन्द्र शर्मा 1464
महिला सशक्तिकरण-समस्या एवं निराकरण–डॉ० डी०एन० सूर्यवंशी; खेम प्रभा 1468
लंड़ौर स्वास्थ्यगाह का ऐतिहासिक विकास सन् 1827 से 1950 ई. तक–अर्जुन सिंह; डॉ० राजपाल सिंह नेगी 1472
हिमाचल प्रदेश का जनजातीय समाज और स्त्री–डॉ० ललिता कौशल 1480
आई.टी.आई. एवं पॉलिटेक्निक पाठयक्रमों के प्रति विद्यार्थी प्रत्यिक्षीकरण का अध्ययन–शिवानी सिंह; प्रोफेसर चारू व्यास 1483
विद्या और कर्म प्रवाह शिक्षा–डॉ० दिनेश कुमार 1490
राजनांदगांव जिले में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना का हितग्राहियों के आर्थिक विकास पर प्रभाव –छन्नी साहू; डॉ० टाण्डेकर के.एल.; डॉ. भाटिया एच.एस. 1493
स्वपाठी विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का अध्ययन–संजीव कुमार; डॉ० सुनीता मुर्डिया 1498
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में छोटानागपुर का योगदान–डॉ० मिथिलेश कुमार 1505
औपनिवेशिक बिहार का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन–रश्मि कुमारी 1508
स्वातंत्र्योत्तर काल में सिंगापुर के विकास में भारतीयों का योगदान–आशा कुमारी सिन्हा 1512
जनजातियों के धार्मिक जीवन का ऐतिहासिक अध्ययन: बिहार के संदर्भ में–मोनी कुमारी 1516
द्वाराहाट के मन्दिरों की वास्तुकला शैली एवं निर्माण सामग्री का एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० संतोष कुमार; सुधीर नैनवाल 1520
वित्तीय समावेशन और डिजिटल साक्षरता: बिहार राज्य के संदर्भ में–नीरज कुमार; डॉ० अमरकान्त चौधरी 1528

भारत में स्त्री शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ: एक दृष्टि–डॉ० श्वेता रस्तोगी 1533
ग्रामीण समाज में जातियों के सामाजिक सांस्कृतिक सम्बन्धों का समाजशास्त्रीय अध्ययन–प्रियंका दीक्षित; डॉ० राकेश प्रताप सिंह 1536
पंचायत स्तर पर नीति निर्णयन प्रक्रिया में ग्रामीण अल्पसंख्यक महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण: "उधमसिंह नगर जिले के विशेष संदर्भ में"–डॉ. भुवन तिवारी; शुभांकर शुक्ला 1540
संस्कृतसाहित्ये पारिस्थितिकतन्त्रम्–सौरभ कण्डवाल: 1546
ज्ञानप्रकाश विवेक के कहानी संग्रह में 'सेवानगर कहाँ है' में चित्रित सामाजिक ययार्थबोध–बिन्दर कुमारी 1549
हिन्दी रुबाई परम्परा में डॉ० हरिवंश राय बच्चन का स्थान–अनिग्धा श्रीवास्तव; प्रो० चन्द्रभानु प्रसाद सिंह 1552
नासिरा शर्मा के उपन्यास 'अक्षयवट' में भ्रष्टाचार की समस्या–पूनम 1556
पूर्व स्वाधीनताकालीन असम : एक अवलोकन–प्रशांत लस्कर 1559
हिन्दी समाचार चौनलों के प्राइम टाइम में खेल बुलेटिनों/खेल कार्यक्रमों में पुरुष व महिला खिलाड़ियों सम्बन्धी खेल समाचारों का तुलनात्मक अध्ययन–प्रोफेसर (डॉ०) बिन्दु शर्मा; पूजा चौहान 1564
हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श की संवेदना ('यमदीप' और 'तीसरी ताली' के विशेष संदर्भ में)–मधु सिंह 1570
भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में महिला सहभागिता–मोनिका विजय 1574
जौनसार-बावर में प्रचलित खत की सामाजिक व्यवस्था का ऐतिहासिक अध्ययन–धीरपाल सिंह; प्रो० राजपाल सिंह नेगी 1578
शिक्षा की नवीन अवधारणा: ओशो की दृष्टि–डॉ० साधना 1587
पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर: ऐतिहासिक परिपेक्ष्य–रूबी कुमारी 1591
नूरपुर (जिला-बिजनौर, उ०प्र०) शहादत काण्ड: १६ अगस्त, १९४२–डॉ० सुरेश चन्द 1596
दुर्ग जिले के शासकीय उच्च प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों के बर्नआऊट का तुलनात्मक अध्ययन –वर्षा हरिहरनो; डॉ० (श्रीमती) वी. सुजाता; डॉ० अर्निबन चौधरी 1598
विस्थापन और महिला घरेलू कामगार–डॉ० सुधा एम देशपांडे 1602
भोजपुरी लोकगीतों में क्रांति के स्वर–सुशीला शर्मा 1606
बाल श्रम की स्थिति–डॉ० प्रतिष्ठा 1610
समकालीन हिन्दी कविता और नारी–डॉ० आर०पी० वर्मा 1613
इक्कीसवीं सदी में वृद्ध विमर्श–महेन्द्र कौर 1616
कौशाम्बी का पुरातात्विक महत्व–डॉ० शिवांगी राव 1619
राजभाषा हिंदी की संवैधानिक पृष्ठभूमि–विनीत कुमार वर्मा 1623
उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के किशोर छात्र-छात्राओं की शैक्षिक रूचि के अन्तर्गत कृषि सम्बन्धी रूचि का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० ठाकुर प्रसाद 1627
रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक चिंतन एवं इसकी वर्तमान संदर्भ में प्रांसगिकता–राजेश गुप्ता 1630
भारतीय राजनीति में नैतिकता और मूल्य–कौशल कुमार सेन 1633
COVID-19 महामारी के दौरान लॉकडाउन और दूरस्थ शिक्षा से सामाजिक वर्ग की उपलब्धि का अंतर बढ़ने की संभावना का एक अध्ययन–डॉ० कालिंदी लालचंदानी 1637
संगीत विषय का ज्ञान प्राप्त भावी शिक्षकों के वैयक्तिक मूल्य की स्थिति का अध्ययन–वीना लोहार; डॉ० अंजना गौतम 1640
पारिवारिक विघटन को रोकने में भारतीय समाज की महिलाओं की सकारात्मक भूमिका; एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–ज्योति पांचाल मिस्त्री
विधिक एवं सामाजिक अध्ययन बाल विवाह: विधिक प्रावधान–श्रीमती नीति निपुण सक्सेना 1648
नंदुरबार जिले में महाविद्यालयीन छात्रो के बीच उपभोक्ता अधिकार एवं उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम का अध्ययन–डॉ० गौतम म० मोरे 1652
धारणीय विकास में महिलाओं की भूमिका–डॉ० रवी आहुजा 1658
भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूह–प्रा० सचिन करभारी जाधव 1661
भारत में महिला उद्यमियों पर एक अध्ययन: देश में आर्थिक स्वतंत्रता और विकास को बढ़ावा देना–प्रा० डॉ० परशराम रतन सोहनी 1665
राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व: स्थिति और समस्याएं–डॉ० जितेन्द्र दोतानिया 1668

बुजुर्ग पीढ़ी की विडम्बना को रेखांकित करता चित्रा मुद्गल का उपन्यास 'गिलिगडु'–डॉ० सुषमा पाल 1672
स्वामी विवेकानंद की दार्शनिक विचारधारा में सांस्कृतिक एवं शैक्षिक मूल्यों का समावेशन एक अध्ययन–मनोज कुमार शर्मा 1676
भारतीय सिनेमा की समानता और असमानता बॉलीवुड के लिए भोजपुरी और बंगाली उद्योग का एक केस अध्ययन –प्रतिमा; प्रो० गोविंद पाण्डेय 1678
अन्य पिछड़ा वर्ग के सामाजिक, आर्थिक विकास में छत्तीसगढ़ राज्य अंत्याव्यवसायी वित्त एवं विकास निगम का योगदान (राजनांदगांव जिले के विशेष संदर्भ में)–डॉ० के०एल० टाण्डेकरत; डॉ० मुन्नालाल नंदेश्वर; डॉ० दिनेश कुमार नामदेव 1684
श्रम, श्रमिक, समस्याएं एवं समाज कल्याण–डॉ० पुष्पराज गौतम 1688
ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा के अवरोधन में अभिभावकों की भूमिका का अध्ययन–डॉ० बृजेश चन्द्र त्रिपाठी 1692
कालिदास के काव्य में वैदिक ऋचाओं की प्रसांगिकता–डॉ० नरेन्द्र कुमार वेदालंकार 1696
साहित्येतिहास की यवनिका के पीछे छिपा स्त्री सच–कविता भाटिया 1699
आयशा अल-तैमूरिया: मिस्र के नारीवाद की जननी–आस्मा अहमद 1702
कुली बेगार आन्दोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–रेखा आर्या 1705
यौगिक परम्परा में योगी स्वात्माराम–उमेश कुमार; डॉ० अरुण कुमार सिंह 1709
उच्च, वरिष्ठ एवं माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन–ज्योति सिंह; डॉ० अनुज 1712
कोरोना महामारी में तनाव प्रबंधन के लिए योग एवं प्रेक्षाध्यान–डॉ० विनोद कस्वां; अनीता हिरण 1717
भिंड जिले का भौगोलिक परिवेश–डॉ० शालिनी गुप्ता 1722
शिक्षा-निष्णात स्तरीय विद्यार्थियों की हिंदी व्याकरणिक दक्षता का अध्ययन–डॉ० फरजाना ईरफान; जगदीश चंद्र आमेटा 1725
बाल अपराध का समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य : एक अध्ययन–डॉ० विवेक कुमार सिंह; कान्ती पाण्डेय 1730
पंजाब के कबिलाओं के परंपरागत व्यावसायों में बदलाव के साहित्य की समीक्षा–गगनदीप सिंह 1734
भारत मे विधिक सहायता एवं जागरूकता : मुद्दे और चुनौतियाँ–सर्वेश सोनी 1738
लैंगिक समानता न्यायिक दृष्टिकोण–सुषमा सिंह 1742
केंद्र-राज्य संबंध और सुशासन पर इसका प्रभाव–आनंद कुशवाह 1746
हिंदी साहित्य में किन्नरों की मानवीय संवेदना–डॉ० गायत्री 1750
भारतीय संदर्भ में जनहित याचिका पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० पूजा गुप्ता 1753
महादेवी वर्मा के संस्मरणों में अद्भुत लेखनी–अनिल कुमार 1758
पीड़ित व्यक्ति के अधिकार विधि के परिपेक्ष में–गिरीश पाल 1762
भारत में बाल श्रम को रोकने पर शिक्षा का प्रभाव–पल्लवी वरैया 1767
समकालीन हिन्दी कहानियों में स्त्री जीवन और संघर्ष–डॉ० सियाराम शर्मा; डॉ० श्रद्धा चन्द्राकर; मीनाक्षी चतुर्वेदी 1771
भारतीय न्यायिक प्रणाली में लोक अदालतें: प्रासांगिकता ढाँचागत संरचना और चुनौतियाँ–मंकेश पाण्डेय 1774
गिरीश पंकज के व्यंगय - संग्रह 'ईश्वर की प्रतीक्षा' में सामाजिक यथार्थ का चित्रण–निगिता रामटेके; डॉ० शंकर मुनि राय 1778
दर्शन की दृष्टि में भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों का महत्व–डॉ० शिव शंकर प्रसाद 1780
हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'हंस' का योगदान–डॉ० रेनू दीक्षित; रोहिताश कुमार 1782
कोरोना महामारी और सेवानिवृत्त व्यक्ति–डॉ० रश्मि दत्त 1785
आंतरिक पीड़ा का मर्म और हिन्दी दलित आत्मकथा–डॉ० रेनू दीक्षित; आशीष कुमार 1787
वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में गांधी शिक्षा दर्शन की सार्थकता- एक अध्ययन–डॉ० नीलम श्रीवास्तव 1791
नई शिक्षा नीति, 2021 - एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० अलका सक्सेना 1795
साहित्य संस्कृति एवं मानव मूल्य–डॉ० विश्वनाथ द्विवेदी 1798
ऋग्वैदिक परम्परा में विष्णु–डॉ० अमिय कृष्ण 1801

रतलाम जिले में रेशम तथा मक्का उत्पादन के लागत-लाभ का तुलनात्मक विश्लेषण–दीपिका शर्मा; डॉ० लक्ष्मण परवाल 1803
मानव जीवन पर वायु प्रदूषण का प्रभाव एवं रोकथाम : एक विधिक अध्ययन–सुनीता कुमारी 1809
राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं की भूमिका: एक विधिक अध्ययन–विवेक कुमार 1814
क्रांतिदूत नामक उपन्यास में राष्ट्रीय चेतना–चैतराम यादव; डॉ. (श्रीमती) बी.एन. जागृत 1820
भारत में लोकतंत्र एवं महात्मा गांधी–डॉ0 अजय प्रताप सिंह 1823
विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर समय नियोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना–श्रीमती रूपा श्रीवास्तव 1827
वर्तमान परिवर्तित परिदृश्य में भारत नेपाल संबंध: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० धनंजय यादव 1830
कोविड-19 महामारी तथा पर्यावरण पर प्रभाव–डॉ० श्वेता मिश्रा 1833
भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका–दीपिका वशिष्ठ; डॉ० रेणू मित्तल 1836
संवाद योजना: लहरों के राजहंस–डॉ० सुनीता 1842
'स्वर - अभ्यास' में वाद्य का महत्व–पारुल शर्मा 1845
अनुसूचित जातियों में प्रमुख है, भारत का मूल "चमार वंश"–डॉ० सुरेश चन्द; डॉ० ओम प्रकाश सिंह 1848
पश्चिमी राजस्थान में भेड़पालन–डॉ० सुभाष 1852
महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों की जागरूकता–रजनी 1857
आसपुर देवसरा ब्लाक के सरकारी और गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में उपलब्ध शैक्षिक सुविधाओं का अध्ययन –बृजेन्द्र कुमार यादव; डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह 1859
ब्रज लोकगीत और नारी जीवन–विकास कुमार 1866
डॉ० शेर सिंह बिष्ट कृत पुस्तक समीक्षाओं का एक मूल्यांकन–भवान सिंह 1869
आधुनिक हिंदी काव्य में पौराणिक स्त्री चरित्र–आयुषी राय 1872
भारतीय संस्कृत नाट्यपरम्परा-एक अवलोकन–मनोरमा कुमारी 1876
ब्रिटिश कालीन पुलिस व्यवस्था: छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में–नरेश कुमार पटेल; डॉ० किशोर कुमार अग्रवाल 1879
हिन्दी कथा साहित्य में शिव प्रसाद सिंह का योगदान–शैलेश कुमार यादव 1885
समाजिक व धार्मिक पुनरूत्थान के प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज–श्रीमती अंगूरी सैनी 1889
रामानंदी द्वादश शिष्यों का परिचयात्मक विवेचन–डॉ० बंशीलाल 1893
डॉ० धर्मवीर भारती के गद्य सात्यि में परम्परा और आधुनिकता–उमेश चंद 1898
पोस्ट बॉक्स नं0 203 नाला सोपारा में चित्रित किन्नर समुदाय की पीड़ा–बबीता 1901
डिजिटल-मीडिया के दौर में गुरु नानक बाणी–सुनील 1904
एक विषय : राजनीति विज्ञान का अध्यापन–मोना वर्मा; डॉ० सत्यभामा सौरज 1907
स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य : एक वैचारिक नोट–जया भारती; हितैषी सिंह 1911
डुग्गर प्रदेश के लोकसंगीत में लोक वाद्यों का महत्व–डॉ० संजीत कुमार 1915
जैन धर्म में महिलाओं की प्रस्थिति–डॉ० सिंह अरूण कुमार लक्ष्मण; डॉ० प्रदीप नारायण डोंगरे 1918
उच्च शिक्षा में शिक्षक सक्षमता: एक विश्लेषण–मो० वकार रजा 1921
शिवमूर्ति की कहानियों में संघर्षरत स्त्री–सरिता 1924
भारत में दलित महिलाओं की स्थिति: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–बिष्णु रंजन कुमार 1926
बी०एड० प्रशिक्षुओं में सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० मंजूषा अवस्थी 1930
कुमाऊँ का भौगोलिक विस्तार–गजदीप कुमार आर्या; कमल सिंह कोरंगा 1933
भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली : चुनौतियां और सुझाव–मो० वकार रजा 1861

'वायरलेस डेटा संचार में लाई-फाई प्रौद्योगिकी का दायरा और चुनौतियां'–श्रीमती कल्पना शामराव सोनवणे 1940
पाकिस्तानी आण्विक क्षमता का भारतीय सुरक्षा पर प्रभाव - एक अध्ययन–डॉ० राजु सिताराम पवार 1946
पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन में सामाजिक समरसता का अध्ययन–कुलदीप गंगवार 1949
कठोपनिषद् के परिप्रेक्ष्य में आत्मानुचिंतन–किरण बाला 1953
जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरणवाद–डॉ० अरविंद कुमार सिंह 1956
अवधी एवं भोजपुरी लोकनाट्यों में लोकचेतना–अनुपम यादव 1960
कोविड 19–"आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"–डॉ० अन्जू सिंह 1964
निरस्त्रीकरण पर संयुक्त राष्ट्र और विश्व शक्तियों का परिप्रेक्ष्य–गुरजीत सिंह 1967
भगवती चरण वोहरा और दुर्गा देवी वोहरा: भारतीय क्रांतिकारियों के बौद्धिक वक्ता–प्रदीप सिंह 1969
सत्कार्यऽस्तकार्यवादयो: स्वरूप विचार:–डॉ. दीपक कुमार पाण्डेय 1972
विजयसिंह पथिक: एक राष्ट्रीय पत्रकार–डॉ० किशोर कुमार; भूपेन्द्रसिंह 1976
समान नागरिक संहिता आधुनिक भारत की महती आवश्यकता : एक विधिक विश्लेषण–डॉ० कामेश्वर प्रसाद 1984
वैदिक पर्यावरणीय दर्शन एवं वर्तमान समय में उसकी उपादेयता–डॉ० पूनम पाण्डेय 1990
उच्च शिक्षण सस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में जनसंख्या गत्यात्मकता सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन–नेहा रावत 1998
तकनीकी शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के छात्रों की जागरूकता का अध्ययन –प्रार्थना यादव; डॉ० अखिलेश कुमार श्रीवास्तव 2003
शिक्षा का बदलता परिदृश्य: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में–डॉ० मुकेश कुमार 2008
'ग्लोबल गाँव के देवता' : आदिवासी संघर्ष का यथार्थ दस्तावेज–प्रा० संतोष बबन पगार 2013
संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान, खोज प्रशिक्षण प्रतिमान और परम्परागत विधि द्वारा शिक्षण का माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की सापेक्ष प्रभावशीलता का अध्ययन–डॉ० बी० बी० सिंह 2016
आधुनिक काव्य में समाज और संस्कृति : एक अनुशीलन–डॉ० कल्पना सिंह 2019
शिवानी गौरा पंत और मन्नू भंडारी जी का राजनैतिक पक्ष–डॉ० नम्रता जैन 2027
प्राचार्यो की महाविद्यालयीन शिक्षा में जवाबदेही अथवा प्रतिबद्धता एवं अधिकारों को सौंपना–रत्नेश कुमार जैन 2029
काँग्रेस की उत्पत्ति - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–प्रिया कुमारी; डॉ० अंजना पाठक 2034
प्रवासी साहित्य की पृष्ठभूमि और सुंदरता : स्त्री विषयक–डॉ० विद्या कुमारी चंद्रा 2037
मानवाधिकार और भारतीय लोकतंत्र–डॉ० संजय एस. धोटे 2040
ग्रामीण भारत में कौशल विकास के द्वारा रोजगार में वृद्धि की सम्भावना: एक दृष्टि–डॉ० शिखा 2044
कोविड-19 के बाद विश्व और भारत–डॉ० किरन सिंह; डॉ० अवधेश कुमार दूबे 2047
धर्मवीर भारती के काव्य 'अन्धायुग' में आधुनिकता–डॉ० नीलम तिवारी 2050
सूफी साहित्य की सामाजिक भूमिका–डॉ० ज्योति श्रीवास्तव 2053
भारतीय समाज में संस्कारप्रद शिक्षा: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–निकी कुमारी 2056
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम एवं सामाजिक सुरक्षा–ओंकार नाथ झा 2060
मानस का हंस : वस्तु विवेचन–डॉ अंबुजा एन् मलखेडकर 2064
जोसेफ बटलर के अन्तर्विवेक सिद्धांत की समीक्षा–नेदा परवीन 2068
अरस्तू के सद्गुण सम्बन्धी विचारों की समीक्षा–अंजली शर्मा 2072
'रोज' कहानी में चित्रित स्त्री जीवन–डॉ० नमिता जैसल; कु० वैभव 2076
भारतीय समाज में गैर-मुस्लिम तलाकशुदा महिलाओं की स्थिति–डॉ० नीशू कुमार 2081
समय के साथ सिनेमा ने बदला रुप और स्वरुप–संजय कुमार सिंह 2085

'समकालीन हिंदी कहानियों में वृद्ध विमर्श'–डॉ. सुनील एम. पाटिल 2088
'मन्नू भण्डारी की कहानी में नारी सशक्तिकरण'–डॉ० रेखा वर्मा 2092
शिक्षा के क्षेत्र में शांतिनिकेतन के सामाजिक तथा मानवीय पक्ष की अवधारणा तथा आधुनिकता के साथ सामंजस्य का अध्ययन –अमिता कुमारी; निशि कुमारी 2094
तनाव प्रबन्धन पर संगीत का प्रभाव–विन्ध्या शुक्ला; डॉ० चारू व्यास 2099
भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति–डॉ० विनीता गुप्ता 2102
चित्रा मुद्गल के आवां उपन्यास में नारी-चेतना–कल्पना शर्मा; डॉ० चित्रा 2105
किशोरावस्था : एक तनाव एवं संघर्षमय स्थिति–शाजिया सुल्तान 2109
जीवन मुक्ति के उपासक: हिन्दी के संत कवि–डॉ० कल्पना दुबे; कांता देवी 2112
भारतीय लोकतंत्र के वर्तमान स्वरूप का एक अध्ययन–डॉ० अनुभा श्रीवास्तव 2115
ग्रामीण संरचना में जजमानी व्यवस्था के गुण एवं अवगुण–डॉ० राजेश कुमार 2119
समसामायिक जीवन में संत तुकाराम का योगदान–डॉ० भारती वलवी (वाघ) 2122
परमहंस स्वामी पूर्णानन्द यति कृत "षट्चक्रनिरुपणम्" में साधनागत तत्त्वों का दार्शनिक स्वरूप–डॉ० प्रदीप 2126
''छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा क्षेत्र में बालश्रमिकों की सामाजिक, शैक्षणिक, शारीरिक व मानसिक स्थिति-एक अध्ययन''–वैशाली प्रकाश ग्वारले 2130
विवेचित महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन यथार्थ (1990 से 2010 तक)–हवासिंह यादव 2134
माध्यमिक विद्यालय स्तर पर दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतो एंवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन–प्रीति उपाध्याय 2139
नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा सम्बन्धी प्रयास–रंजीत कुमार सिंह; डॉ० इम्तेयाज आलम 2143
हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की समस्याएँ–अमित कुमार 2146
बिहार राज्य के ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक-सामाजिक विकास में स्वयं सहायता समूह का योगदान–काजल कुमारी; डॉ० मोहन कुमार लाल 2148
वैश्विक अवधि में कृषि विविधीकरण का कृषि उत्पादन पर प्रभाव: बिहार के संदर्भ में एक विशेष अध्ययन –रमण जी यादव; डॉ० मोहन कुमार लाल 2153
बिहार राज्य के ग्रामीण बेरोजगार युवकों को आर्थिक रूप से सबल बनाने में कौशल विकास योजना की भूमिका–मनोज कुमार साह 2157
दलित अस्मिता के कवि: कबीर–डॉ० अजायब सिंह 2160
यथार्थ के धरातल पर उभरती हुई अमरकांत की कहानियाँ–डॉ० यदुवीर सिह खिरवार; श्रीमती रेणु बाई 2164
बौद्ध धर्म में निहित वैदिक दर्शन के तत्व–डॉ० ईशा शर्मा 2171
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य विद्यालयी सामाजिक समावेषण का तुलनात्मक अध्ययन–प्रो० पी०एस० त्यागी; सतीश बाबू 2174
मन्नू भंडारी की कहानियों में स्त्री–डॉ० राम पाण्डेय 2183
बाल श्रम एवं कोविड-19–डॉ० रूपा यादव 2186
गालिबकाव्यम् में मदिरा और मधुशाला–शहनाज़ कुरैशी 2191
''जनजातीय क्षेत्र (उदयपुर संभाग) के जवाहर नवोदय विद्यालयों की अकादमिक स्थिति''–डॉ० सुयश चतुर्वेदी; ललिता कुँवर राठौड़ 2194
भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति–शिल्पा शाह 2200
सशक्तिकरण में छत्तीसगढ़ भवन एंव अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मंडल रायपुर द्वारा संचालित योजनाओं का मूल्यांकन-एक अध्ययन –डॉ० के०एल० टाण्डेकर; श्रीमति अंकिता शर्मा 2203
ग्रामीण क्षेत्रों के बाल विकास में ई-लर्निंग तकनीक के महत्त्व का अध्ययन–डॉ० मनाली उपाध्याय 2207
दल–बदल की अवधारणा–डॉ० उमाकान्त पासवान 2212
पर्यावरण प्रदूषण के भौतिक एवं प्राकृतिक तत्वों का अध्ययन–डॉ० रविन्द्र कुमार 2216
21वीं सदी का शिक्षण और संचार तकनीक के साथ सीखना: एक महत्वपूर्ण टिप्पणी–नीरद राजा 2222

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मकता पर सोशल मीडिया का प्रभाव–शाहिना मतीन 2224
स्नातक स्तर पर अध्ययनरत मुस्लिम एवं गैर मुस्लिम छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन –वजीह अहमद खां 2227
पिछड़े बालकों की समस्यायें, शिक्षा एवं समायोजन–इशिता; डॉ० आदित्य नारायण चौधरी 2230
उत्तर-प्रदेश में माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की उपादेयता–डॉ० चेतना पाण्डेय; संजय सिंह 2233
कानपुर देहात जनपद में कृषि में सिंचाई साधनों का योगदान: एक भौगोलिक अध्ययन–चन्द्रप्रभा 2236
आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में स्वामी विवेकानन्द जी का नव्य वेदान्त दर्शन–देश दीपक वर्मा; डॉ० श्रीप्रकाश मिश्र 2240
जनपद बागपत के ग्रामीण खेतीहर श्रमिकों का एक आर्थिक एवं सामाजिक विश्लेषण–पवन त्रिवेदी 2243
विज्ञान के युग में मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता–डॉ० अंजू लता; श्रीमती प्रियंका साहू 2252
1857 के विद्रोह की वीरांगना: रानी अवंतीबाई–बबली कुमारी 2255
पूर्व मध्यकाल में बौद्ध शिक्षालयों एवं आचार्यों के अंतर्राष्ट्रीय संबंध–मनोज कुमार 2258
भारतीय राजनीतिक चुनावों में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन–वेंकटेश्वर; डॉ० खेमचंद महावर 2263
भारत में मतदान व्यवहार के निर्धारकों का एक अनुभवजन्य अध्ययन–प्रताप सिंह; डॉ० खेमचंद महावर 2267
हिंद स्वराज और भूमंडलीकरण: एक गांधीवादी परिप्रेक्ष्य–डॉ० निधि रायजादा; रंजय प्रसाद 2270
वित्तीय ज्ञान के विकास में प्रधानमंत्री जनधन योजना की भूमिका सुपौल जिला के ग्रामीण इलाकों के संदर्भ में एक अध्ययन–संजीव कुमार 2272
योगाभ्यास का विद्यार्थियों के चिंता पर प्रभाव का अध्ययन–डॉ० रामा यादव; प्रियंका कुमारी 2278
विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन आदत एवं पालकीय प्रोत्साहन का तुलनात्मक अध्ययन–प्राची अनर्थ 2283
हिन्दी के आधुनिक कबीर 'नागार्जुन'–डॉ० रेखा दुबे; ज्योति नरवाल 2287
अटल बिहारी की प्रासंगिकता–डॉ० सविता वर्मा; विरेन्द्र साहू 2289
रूस की विश्वव्यापी रणनीति: एक राजनीतिक विश्लेषण–शैलेन्द्र कुमार 2291
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में फाल्गुन मास का चित्रण–विद्या देवी; डॉ० बलराम गुप्ता 2295
बदलते भारतीय परिदृश्य में देशांतरण का दंश–डॉ० सुजाता चतुर्वेदी 2298
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य विद्यालयी सामाजिक समावेषण का तुलनात्मक अध्ययन –प्रो० पी०एस० त्यागी; सतीश बाबू 2302
इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों की साहित्यिक विचारधारा–किरण कलिता 2307
इंटरनेट प्रभाव का अध्ययन संबंध में सामाजिक जागरूकता, कक्षा प्रेरणा और माध्यमिक–अतुल कुमार 2309
आदिवासी समाज में सामाजिक चेतना : संजीव के 'धार' उपन्यास के सन्दर्भ में–राजकुमार किशनराव 2314
भारत के सामरिक हित - तथा भारत चीन सीमा विवाद–डॉ० अंशु पांडे 2318
"गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों का विश्लेषण" (म.प्र. के रतलाम जिले के विशेष संदर्भ में) –डॉ० लक्ष्मण परवाल; डॉ० अरविंदर कौर गांधी 2322
सारस्वत राजशेखर:–डॉ० प्रकाश नारायन मिश्र 2329
वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 - एक अवलोकन–श्रीमती सीमा नाईक 2336
आत्मनिर्भर भारत अभियान का विश्लेषण: सूक्ष्म व लघु उद्योगों के संदर्भ में–गुरचरण सिंह; डॉ० ओ०पी० सिंह 2338
अमृता प्रीतम के कथा साहित्य में नारी की सामाजिक समस्याएँ–ज्योति सक्सेना; डॉ० सविता वर्मा 2342
सोनपुर मेला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन–अमिताभ बच्चन 2346
सुशासन की राजनीति के जनक अटल बिहारी वाजपेयी–स्वदेश सिंह 2349
अखिलेश की कहानियों में उदारीकरण और सामाजिक परिवर्तन–सुनील यादव 2352
माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० रोहित कुमार त्रिवेदी 2355

स्वच्छता के प्रति सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–संतोष कुमार यादव; डॉ० शिवराज कुमार 2359
समाज पर मोबाइल फोन के प्रभाव का एक समाजिक कार्य अध्ययन–नीमा पाठक 2363
छत्तीसगढ़ में शिक्षित युवाओं पर बेरोजगारी का अध्ययन(कबीरधाम जिले के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ० खोमन लाल साहु; प्रो० मुकेश कामले 2371
राग भैरवी की बन्दियों में कवित्त सौन्दर्य–प्रो० अन्जना गौतम; प्रीति शर्मा 2376
बिलासपुर जिले के अशासकीय पू.मा. शालाओं के छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन–डॉ० संजीत कुमार तिवारी; राजकुमार सिंह 2383
भारत रुस संबंध-एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० बिपिन दूबे 2386
भारतीय राष्ट्रवाद में सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान–सुरेश चन्द्र शर्मा 2393
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के परिवेश का उनके आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन–श्रीमती रूपा श्रीवास्तव 2398
गीता में वर्णित कर्मयोग–डॉ० जेबा खान 2401
महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में सामाजिक कुरीतियों का अध्ययन–खेमबाई साहू; डॉ० सविता वर्मा 2404
खेल से बालक और बालिकाओं के व्यक्तित्व मुल्यों एवं समायोजन प्रक्रिया का अध्ययन–रामकुमार कुशवाहा; डॉ० ए० के० त्रिपाठी 2407
विभिन्न खेलकुदों में खिलाड़ियों के असरकारक निष्पादन में योग के प्रभाव का एक अनुभवात्मक अध्ययन–सरदार सिंह; डॉ० ए० के० त्रिपाठी 2412
चित्रकूट क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं धार्मिक विरासत और पर्यटन विकास का समीक्षात्मक अध्ययन–सुशील कुमार यादव 2417
हिन्दी साहित्य में छायावादी कवियों के काव्य में प्रकृति का रूप–दर्जी चन्द्रिका बहन छगनभाई 2422
मध्यकालीन भारत में इतिहास लेखन परंपरा एवं स्वरूप–डॉ० राघवेन्द्र यादव 2426
आदिवासी कविता में नारी की संवेदनाएँ–डॉ० एम यशोदा देवी; डॉ० के० चंद्रा 2430
जनपद आजमगढ़ में प्रमुख व्यवसायिक फसलों की उत्पादकता में दीर्घकालिक परिवर्तन (1997-98 से 2017-18) –सर्वज्ञ कुमार सिंह; विकास सिंह 2437
गाँधी और विनोबा की अहिंसा–डॉ० सितेश कुमार 2441
छत्तीसगढ में बुनियादी शिक्षा का ऐतिहासिक अनुशीलन (जेनसन मेमोरियल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जगदीशपुर के विशेष संदर्भ में)–डॉ० बन्सो नुरूटी; रणजीत कुमार 2444
स्वस्थ जीवन में मुद्रा चिकित्सा की भूमिका–श्रीमती बबीता 2450
पंजाबी सूफी काव्य में सौंदर्य-संवेदना–डॉ० कुलदीप कौर पाहवा 2460
मुगल हरम में स्त्रियों की स्थिति–डॉ० अंजना पाठक 2464
रंगकर्म द्वारा उत्कृष्ट नाटकों की समकालीन व्याख्या–आलोक मिश्र 2466
छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास पर सामाजिक और आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन–अनुराग यादव 2468
ग्रामीण विकास तथा विकेन्द्रित आयोजना के परिप्रेक्ष्य में बिहार के पंचायती राज संस्थाओं का एक ऐतिहासिक अध्ययन–रवि शंकर दयाल 2472
नक्सलवाद: भारतीय लोकतंत्र को चुनौती–रंजीत सिंह 2477
उच्च माध्यमिक स्तर के राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों में अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के शैक्षिक कार्यो के प्रति जागरूकता का अध्ययन –प्रो० कल्पना सैंगर; लक्ष्मी छीपा 2481
रोमेश चन्द्र दत्त के अकाल के सम्बन्ध में अर्थशास्त्रीय विचार–डॉ० तेजवीर सिंह; अजय यादव 2485
श्यामेश्वर महादेव मन्दिर छपकौली, जनपद हापुड़ (उत्तर प्रदेश)–डॉ० हरीश कुमार 2489
किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन–गौरी शंकर 2493
राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री के अधिकारों और कार्यों का एक संक्षिप्त अध्ययन–निखिल कुमार 2500
संसदीय कार्यप्रणाली में छत्तीसगढ़ क्षेत्र की प्रथम महिला सांसद मिनीमाता की भूमिका : एक अध्ययन–डॉ० अनामिका शर्मा 2502

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में गृह कलह की समस्याएं–डॉ० निकेता; नितिन कुमार 2509
सार्वजनिक पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण में आई0सी0टी0 (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) के अनुप्रयोगों का महत्व: एक अध्ययन –अजय कुमार मिश्र; कुँवर संजय भारती 2512
औरंगजेब की धार्मिक नीति एवं उसका प्रभाव–रविन्द्र प्रताप सिंह 2516
गुप्तकालीन मुद्राओं का संक्षिप्त अध्ययन–पल्लवी सक्सेना 2519
कला संकाय के महिला व पुरुष विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन–श्रवण कुमार यादव; डॉ० जय प्रकाश दूबे 2522
न्यायिक सक्रियता: अर्थ, प्रकृति एवं वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता–अनीता मीणा 2527
इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और रोजगार के अवसर–प्रा० डॉ० बेबी राघू कोलते 2533
जनमत निर्माण में नारों की भूमिका: एक अध्ययन (भारतीय चुनाव के विशेष संदर्भ में)–डॉ० शिवेन्द्र मिश्रा 2535
राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक अवलोकन–राकेश कुमार; डॉ० आशा जायसवाल 2539
अमरकांत के साहित्य का अवदान–डॉ० अभिलाषा शुक्ल 2542
प्रधानमंत्री मोदी के शासनकाल में चीन और नेपाल संबंध–अवधेश प्रसाद 2544
हिंद महासागरीय क्षेत्र में भारत की स्थिति–अजय चौधरी 2547
बिहार विधानसभा चुनाव 2020 का चुनावी: प्रदर्शन एक संक्षिप्त अध्ययन–अजय कुमार ओझा 2550
गणित में निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण विधि का परम्परागत शिक्षण विधि से तुलनात्मक अध्ययन–विभय कुमार सोनी 2553
वर्तमान युग में कर्म-नियम की प्रासंगिकता–डॉ० रीटा खन्ना 2558
महिला उद्यमिता के विकास में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY) की भूमिका का अवलोकनात्मक अध्ययन–डॉ० विजय ग्रेवाल; नीलम कुशवाह 2561
पेंशनभोगी महिलाओं के अन्त:पारिवारिक सम्बन्ध एवं भूमिका संघर्ष (नैनीताल नगर की पेंशनभोगी महिलाओं पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)–डॉ० निर्दोषिता बिष्ट 2566
काशीनाथ सिंह की कहानियों में मनोवैज्ञानिक संवेदना–डॉ० जयप्रकाश यादव; देवब्रत यादव 2574
कोविड-19 के दौर में भारत-नेपाल संबंध–आशुतोष कुमार 2577
भारतीय इतिहास में शिक्षा का 'जेन्डरीकरण' और महिलाओं की दावेदारी- एक नारीवादी अवलोकन–डॉ० मनस्विनी श्रीवास्तव 2581
भोजपुरी लोकगीतों का काव्य-वैभव–डॉ० उत्तम कुमार शुक्ल 2585
पंचायती राज की आवश्यकता, समस्याएं एवं सुधार–इंजमाम उल अहमद अंसारी 2589
अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं विजय सिंह पथिक–प्रो० संजय सिंह; अमित कुमार 2592
रविन्द्रनाथ टैगोर जी के शैक्षिक एवं दार्शनिक चिन्तन के आयामों का संक्षिप्त मूल्यांकन–कृष्ण सिंह अधिकारी; डॉ० मंजुला सिंह 2594
भारतीय राजनीति में जयप्रकाश नारायण का योगदान–रूबी कुमारी 2599
केदारनाथ सिंह के काव्य में लोक-संस्कृति की अवधारणा–सविता 2602
पाणिनि प्रोक्त 'आतोऽनुपसर्गे क:' कृत्प्रत्यय-विधायक सूत्र: एक विवेचन (विश्वेश्वरसूरि के आलोक में)–सुरेन्द्र सिंह 2606
नई शिक्षा नीति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों का स्थान–डॉ० सुनीता 2609
भारतीय राष्ट्र दृष्टि–डॉ० संजय कुमार 2612
वेदों में वर्णित विद्या अलंकृता नारी के ऋषिकात्व की विवेचना–रोहणी तिवारी 2615
रतलाम जिले में स्वर्णजंयती ग्राम स्वरोजगार योजना के अंतर्गत गठित एवं विभिन्न ग्रेड उत्तीर्ण स्व-सहायता समूहों का विश्लेषण –डॉ० लक्ष्मण परवाल; डॉ० अरविंदर कौर गांधी 2620
1857 की क्रान्ति में बुन्देलखण्ड की भूमिका–राम सिंह वर्मा 2625

गृह निर्माणप्रारम्भहेतवे शुभाशुभमासा: तेषां परिणामश्च:–डॉ० ऋचा त्रिवेदी 2630
वाक्यपदीय विवेचित लक्षणा का स्वरूप–डॉ० पवन शर्मा 2633
भारत-नेपाल संबंध 2009 से अब तक–अनुराग यादव; डॉ० प्रेमचन्द्र यादव 2636
पंचायती राज में महिला सहभागिता–डॉ० वंदना जायसवाल; विनोद कुमार 2639
भारत-बांग्लादेश संबंध 2014 से अब तक–रामपत; डॉ० ममता यादव 2643
कोविड -19 में महिला स्वास्थ्य कर्मियों की भूमिका–डॉ० शिल्पा शाह 2646
'कोरोना काळात आर्थिक संकटात सापडलेल्या पालकांनाकुटुंब सावरण्यासाठी मदत करणाऱ्या विद्यार्थीनी : एक अवलोकन'
–डॉ० राजाराम रा० जाधव 2649
कोरोना काळात विविध क्षेत्रातील महिलांचे कार्य–डॉ रवींद्र कांबळे 2653
पंजाबी सूफी संगीत में प्रेम और सौंदर्य-संवेदना–विष्णु कुमार 2656
सूरदास का सौन्दर्य-बोध–डॉ० अनु शर्मा 2659
अस्पृश्यता निवारण एवं नारी जागरण में स्वतंत्रता सेनानी डॉ. राधा बाई की भूमिका: छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में
–विनोद कुमार जांगड़े; प्रो० आभा रूपेन्द्र पाल 2665
महिलाओं के अधिकार: एक विश्लेषण–डॉ० अलका 2669
हिन्दी आलोचकों की दृष्टि में छायावाद–अजय कुमार सिंह 2672
बौद्ध धर्म-दर्शन प्रभावित ऐतिहासिक हिन्दी उपन्यासों में स्त्री-चेतना–जितेन्द्र सिंह 2675
सृष्टि के विकास क्रम का परिचय: सांख्य दर्शन–मोनिका प्रजापति 2678
जनपद जौनपुर (उ0प्र0) में कृषि गहनता के गत्यात्मकता का स्थानिक वितरण–राजेश कुमार पाल 2681
विद्यार्थियों के आक्रामकता का उनके समायोजन से संबंध का अध्ययन–हेमन्त कुमार साहू; डॉ० लक्ष्मी वर्मा; डॉ० एन०पापा 2687
गुटबंदी की अवधारणा का समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ० मौ० उजैर; डॉ० आर०के० ठाकुर 2691
भारतीय सभ्यता, संस्कृति और कला का वर्तमान स्वरुप–डॉ० रश्मि शर्मा 2695
डॉ० अनन्त सदाशिव अल्तेकर के द्वारा बिहार में किए गए पुरातात्विक कार्य–अराधना झा; प्रो० (डॉ०) नवीन कुमार 2700
विनोबा भावे के विचारों का वर्तमान में प्रभाव–नागेश सिंह; डॉ० ममता यादव 2704
विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता पर गीता अध्यापन का प्रभाव: तुलनात्मक अध्ययन–कविता सिंह; डॉ० चारु व्यास 2707
ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य शैक्षिक अभिवृत्ति एवं आत्मप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन
–महेन्द्र कुमार पटेल; डॉ० रविन्द्र कुमार 2711
नर सिंहवर्मन प्रथम एवं उसकी स्थापत्य कला–प्रवीण कुमार तिवारी 2717
पूर्व माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की पाठय पुस्तकों का मानकों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन–देवेन्द्र कुमार; प्रोफेसर रामबली यादव 2721
ब्रिटिश भारत में बिहार में कृषि उद्योगों के विकास का मूल्यांकन–कुमार देवेश 2725
हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा में सौंदर्यानुभूति–अनुराधा शुक्ला; प्रो० नीलमणि दूबे 2728
''भारतीय समाज में मनुष्य की जातिगत स्थिति और दलित आत्मकथाएं''–मनीष कुमार महरा; डॉ० आरती झा 2732
स्वामी रामदेव के शैक्षिक विचार एवं, योगासन का अध्ययन–डॉ० हलधर यादव; ओमपाल सिंह 2736
हिंदी साहित्य में दलित चेतना की पृष्ठभूमि–राजेश कुमार गुप्ता 2741
भारतीय युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति–डॉ० दीपाली सक्सेना 2744
गाँधीवादी आर्थिक दर्शन के परिदृश्य में अम्बेडकर का आर्थिक चिंतन–डॉ० अनिल कुमार 2752

पाण्डुलिपि सरंक्षण: एक अभिगम–डॉ० अनीता; विजय कुमार भारती 2755
गद्दी जनजाति के लोकगीतों में विरहगान–भरत सिंह 2759
लिच्छवि-गुप्त सम्बन्धों का राजनीतिक विश्लेषण–डॉ० उमेश सिंह 2765
'मुर्दहिया' आत्मकथा में लोकविश्वास–डॉ० सचेन्द्र कुमार 2767
औपनिवेशिक उत्तराखण्ड में स्त्री शिक्षा एवं स्त्री चेतना का प्रसार–रोहित पाण्डेय; डॉ० शरद भट्ट 2770
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में बहुविषयक शिक्षा: सरोकार और चुनौतियाँ–डॉ० नाहर सिंह 2773
भारतीय ग्रामीण समुदाय में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन के मार्ग में बाधाएँ–प्रमोद वर्मा; डॉ० आर0के0 ठाकुर 2776
माध्यमिक स्तर के हिंदी माध्यम वाले विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण दक्षता का अध्ययन–दिव्यांशी आमेटा 2780
ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियो में ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियां एवं संभावनाएँ–डॉ० सुनीता अग्रवाल 2785
भारत में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता (21वीं सदी के विशेष संदर्भ में)–डॉ० अन्जू शर्मा 2789
पंचशील की प्राथमिक शिक्षा में अवधारणा–शिप्रा अग्रवाल; डॉ० हलधर यादव 2794
बसोहली चित्रकला में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जीवन दर्शन–डॉ० ईश्वर चन्द गुप्ता 2798
योग दर्शन की प्रासंगिकता–डॉ० सुनीता भार्गव; डॉ० रीटा झाझडिया 2801
जे० कृष्णमूर्ति के शान्ति व नैतिक मूल्य का अध्ययन–दिलीप कुमार सिंह 2804
हरियाणा लोकसाहित्य में कामपरक मूल्यों की अभिव्यक्ति–पूनम रानी; डॉ० सुरेश कड़वासरा 2807
जैनेन्द्र कुमार की वृद्ध मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ एवं मानसिक दशाएँ–जयश्री काकति 2812
यमदीप किन्नर जीवन का खुला दस्तावेज–आर्या एम०वी० 2815
मिट्टी, जड़ों से जुड़ी हुई कविता–श्रीलेखा के०एन० 2817
महर्षि पतंजलि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–मनोज कुमार सकलानी; डॉ० हलधर यादव 2819
मूल्यों का दार्शनिक अर्थ एवं वर्गीकरण–गीता पांडे; डॉ० हलधर यादव 2823
कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक संतुष्टि का अध्ययन–ममता मेहरा; डॉ० मंजुला सिंह 2827
स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन–पूनम रानी; डॉ० हलधर यादव 2831
भारत में माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक विषय के चयन का विधार्थियों की व्यावसायिक अभिवृति पर प्रभाव का एक अध्ययन –शशि शर्मा; डॉ० हलधर यादव 2835
कामकाजी महिलाओं की पारिवारिक समायोजना का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–भूमिका मिश्रा; डॉ० विमला सिंह 2839
शिवमूर्ति की कहानियों का सामाजिक यथार्थ–कृष्ण देव 2843
खड़ी बोली गद्य के विकास में 'हिंदी प्रदीप' का योगदान–सुभाष 2846
'देश भीतर देश' उपन्यास और असम की राजनीति–संजीव मण्डल 2849
मधु कांकरिया के उपन्यासों की भाषा–दीपा कुमारी 2853
विभाजन और विस्थापन के बीच का संघर्ष बनाम 'सिक्का बदल गया' कहानी–गीतांजलि 2857
पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से महिला सशक्तिकरण–उषा कुमारी 2860
डॉ० भीमराव अम्बेडकर का दलित चेतना एवं सामाजिक उत्थान में योगदान–बबीता मलिक; डॉ० राजीव कुमार 2864
हरियाणा राज्य में महिला राजनीतिक अधिकारों की स्थिति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० संगीता विजय; ऋतु शर्मा 2868
गुरु तेग बहादुर बाणी की विलक्षणता–डॉ० रविन्द्र कौर बेदी 2873
संत रविदास: अमृतवाणी–डॉ० दर्शन सिंह 2876
ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के धर्म, राजनीति एवं नैतिकता सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता–डॉ० कुलदीप सिंह 2879
विनोद कुमार शुक्ल के कथा साहित्य में परिलक्षित भाषा एवं शिल्प–अनीता; प्रो० प्रदीप के० शर्मा; प्रो० रामजन्म शर्मा 2883

प्रतिलिप्याधिकार एवं पुस्तकालय: एक अवलोकन–डॉ० चंद्रवीर सिंह 2886

'अंधेरे मे' 'मैं' और 'वह' के बीच खड़े मुक्तिबोध–डॉ० अंजू दुबे 2890

भारतीय राजनीति में जयप्रकाश नारायण का योगदान–रूबी कुमारी 2895

वंशवाद और भ्रष्टाचार: स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में–दीपक कुमार राय 2898

कालिदास-प्रणीत 'मेघदूत' में मानवीय मूल्यों की सर्जना–सुनीता सिंह; डॉ० शालिनी अग्रवाल 2901

केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राज्य विश्वविद्यालय तथा निजी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पादन का अध्ययन
–वीरेन्द्र प्रताप यादव; डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह 2904

हरियाणा लोकनाट्य में संस्कृति के नीतिगत पारिवारिक आयाम–ममता रानी; डॉ० शक्तिदान चारण 2910

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविताओं में राष्ट्रीय उद्‌बोधन–सबिता पॉल 2916

मीडिया और महिला समाज : एक सर्वेक्षण–डॉ० मीना 2920

उच्च माध्यमिक स्तर के जनजाति विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता एवं गृह वातावरण का अध्ययन–डॉ० सावित्री देवी मीणा 2922

भारतीय समाज में लिंगानुपात की चुनौती–डॉ० मंजुला त्रिपाठी 2929

बौद्ध धर्म व पर्यावरणीय चेतना–डॉ० अनिता प्रकाश; कु० विक्टोरिया 2931

'गणेश शंकर विद्यार्थी का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान'–डॉ० अनीता प्रकाश; सुशील कुमार 2937

गरीब की गाय - बकरी–डॉ० धर्मेन्द्र सिंह 2940

पंचायती राज में गांधी दर्शन का एक अवलोकन–डॉ० राकेश रंजन 2942

भारत में महिला सशक्तिकरण में नारी शिक्षा का महत्त्व–डॉ० शुचि संतोष बरबघर 2945

पूर्व प्राथमिक शिक्षा: समस्या एवं सामाधान–डॉ० अमित कुमार पाण्डेय 2951

उच्च शिक्षा की स्थिति व प्रभाव–अनिल कुमार यादव 2956

शिक्षण अधिगम के सिद्धांत एवं स्तर–अर्सलान अहमद 2959

स्वतंत्रोत्तर भारत में विभिन्न शिक्षा समितियाँ एवं उच्च शिक्षा का प्रसार–अरविन्द्र कुमार मिश्रा 2962

प्राथमिक शिक्षा का महत्व एवं उद्देश्य–अरविन्द कुमार यादव 2965

प्राथमिक शिक्षा एवं नए प्रयोग–अश्विनी कुमार 2969

भारत में मध्यकालीन शिक्षा का उद्‌भव एवं विकास–डॉ० नागेन्द्र राम 2972

भोजपुरी लोक गीतों में चित्रित ईश्वर का स्वरूप–डॉ० अभय नाथ सिंह 2976

तिब्बत की अर्थव्यवस्था एवं स्वायत्तता के लिए विमर्श–डॉ० अशोक कुमार सिंह 2979

भारतीय सुरक्षा के सन्दर्भ में नेपाल का महत्व–डॉ० अश्विनी कुमार पाण्डेय 2982

परिवार में रहने वाले सदस्यों के बीच आपसी सम्बन्ध का एक अध्ययन–डॉ० बीना पाण्डेय 2985

गर्भकालीन विकास को प्रभावित करने वाले कारक–डॉ० भाग्यवंती चौहान 2988

समाजवाद और पूंजीवाद पर विचार–डॉ० गंगा राम पटेल 2992

भारतीय जनजाति और संस्कृति की अवधारणा–डॉ० राजीव कुमार सिंह 2995

भारतीय लोकतंत्र की सशक्त राजनैतिक महिलाएँ–डॉ० रूदल कुमार सिंह 2998

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का छुआछूत एवं जातिय भेदभाव उन्मूलन सम्बन्धी विचार–डॉ० शारदा यादव 3001

स्वच्छता जनआन्दोलन का समाज पर प्रभाव–डॉ० सुनीता गुप्ता 3003

शिक्षा एवं शिक्षा के कार्य–कुमारी सरिता 3006

शिक्षा में गुणात्मक सुधार–कुसुम देवी 3009

ब्रिटिश काल में भारतीय शिक्षा–राजेश कुमार यादव 3012

भारतीय शिक्षा का अर्थ: आदर्श व्यवहार एवं नैतिक शिक्षा–रजनीश कुमार शुक्ल 3015

शिक्षण अधिगम के सिद्धांत एवं अधिगम स्तर–राम विलास यादव 3019
पूर्वमध्यकालीन आर्थिक स्थिति, सामन्तवादी व्यवस्था के सन्दर्भ में–संजय कुमार शुक्ल 3023
शिक्षा, संस्कृति एवं समाज–संजीव कुमार चतुर्वेदी 3026
प्राथमिक शिक्षा का विकास एवं आदर्श व्यवहार–संतोष कुमार पाल 3029
मानव जीवन के व्यवहार में शिक्षा–सुबाष कुमार 3032
शिक्षा: सामाजिक कल्याण के साधन के रूप में–सुरेन्द्र कुमार रजक 3035
भारतीय शिक्षा की समस्याएँ–विजेन्द्र कुमार गुप्त 3040
भारत में उच्च शिक्षा का प्रसार तथा प्रभाव–विकास सिंह 3043
भारतीय सामाजिक व्यवस्था का आधार पुरूषार्थ चतुष्क–डॉ० गिरीश गौरव; राजू रावत 3049
रायपुर के उच्च शिक्षा के छात्रों के बीच शैक्षणिक चिंता, कारण और निवारक उपाय पर अध्ययन–अंकिता चन्द्राकर; डॉ० संगीता एस. धनाढ्य 3057
छत्तीसगढ़ के रायपुर में प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रमों का एक अध्ययन–संजय कुमार साहू; डॉ० रजनी दिवाकरराव शिवनकर 3062
कमलेश्वर के उपन्यासों का विविध परिप्रेक्ष्य–सुरजीत कुमार 3066
बक्सर जिला में साक्षरता का परिवर्तित प्रतिरूप–राजु कुमार; प्रो० (डॉ०) नरेन्द्र सिंह 3069
राजेन्द्र अवस्थी के कथा-साहित्य में आर्थिक स्वरूप–डॉ० दीपा त्यागी; आशु चौधरी 3073
मुद्रास्फीति का भारतीय अर्थव्यवस्था और जीडीपी पर प्रभाव: एक विश्लेषण–डॉ० शम्मी कुमारी 3078
अमृतलाल नागर की कृतियां: एक संक्षिप्त अवलोकन–पूनम त्यागी 3081
खेलो में नैतिकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–अंजू 3084
बौद्धकालीन सामाजिक व्यवस्था–नीरज कुमार भारती 3087
स्मार्ट क्लास एवं परम्परागत शिक्षण विधि का कक्षा - 9 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव: एक अध्ययन–डॉ० अर्चना मेहन्दीरत्ता 3089
पेसा कानुन, अनुसूचित क्षैत्र एवं कानुन व्यवस्था–डॉ० नितेश खाँट 3092
बदलते सुरक्षा वातारण में भारत-इजराइल सम्बंध–डॉ० विजय कुमार 3094
सरोकार केंद्रित पत्रकारिता और सकारात्मक खबरों का ताना-बाना (दैनिक जागरण के विशेष सन्दर्भ में)
–डॉ० धीरज कुमार; डॉक्टर अरुण कुमार भगत 3099
रांगेय राघव की कहानियों में व्यक्त 'बँटवारे' की पीड़ा–अकरम ऐजाज 3106
राष्ट्रीयता के अमर गायक: मैथिलीशरण गुप्त–सुमैय्या 3109
महाराष्ट्र के उच्च शिक्षा व्यवस्था का चिंतन–डॉ० हेमचंद्र ससाने 3112
सोशल मीडिया एवं टेलीविजन पर प्रसारित जेंडर रूढ़िवादिता–डॉ० सुजान सिंह नेगी; डॉ० नदीम अख़्तर 3116
बिहार में सामाजिक आंदोलन का निहितार्थ–डॉ० राजीव कुमार 3120
संथाली समाज एवं संस्कृति का ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० सुरेन्द्र कुमार 3125
सांख्य-योग के बीच घनिष्ठ संबंधों का दार्शनिक अध्ययन–डॉ० ओम प्रकाश प्रभाकर 3128
भारत-अफ्रीका संबंध: आर्थिक परिदृष्य (2010 से वर्तमान तक)–नितेश कुमार; डॉ० विनय सिंह यादव 3130
त्रिलोचन और उनके काव्य में प्रकृति के विभिन्न भाव–डॉ० बबलू कुमार 3133
राजस्थान राज्य के दौसा जिले में प्रारम्भिक शिक्षा की स्थिति: एक अध्ययन–डॉ० संगीता विजय; लक्ष्मी शर्मा 3138
संत साहित्य में सामाजिक चेतना–डॉ० ज्ञानोबा गादगे 3146
बिहार के पश्चिमी चम्पारण जिले की थारू जनजाति में राजनीतिक जागरूकता: एक आनुभविक अध्ययन
–डॉ० संगीता विजय; कुमुंदीनी रंजना खतईत 3149
राजनांदगाँव जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की परीक्षा चिंता तथा आक्रमकता का उनकी शैक्षिक
उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव पर अध्ययन–समीना कुरैशी; डॉ० शितल अडगाँवकर 3158
कथाकार कुसुम अंसल - सृजन के विविध आयाम–नारायण रमण चौधरी; डॉ० रमेश जगताप 3163

भारत में ड्रोन तकनीक की चुनौतियां एवं सम्भावनायें–डॉ० संगीता चौधरी 3167
काव्यशास्त्र-परम्परा तथा आचार्य भानुदत्त का योगदान-समीक्षात्मक मूल्यांकन–डॉ० सुजाता चतुर्वेदी; विष्णुकान्त गुप्ता 3175
मृदुला गर्ग के उपन्यासों में प्रेम और काम निरूपण–नन्दिनी सिंह; डॉ० अलका द्विवेदी 3177
संतोष चौबे की कहानियों में मानवीय संबंधों का चित्रण–मिताली खोड़ियार; डॉ० आंचल श्रीवास्तव 3179
भारत के विभाजन के दौरान साम्प्रदायिक दंगे एवं महात्मा गांधी की शांति स्थापना की नीति–सदीक 3182
महाभारत में दंड व्यवस्था: एक सूक्ष्म अध्ययन–मीनाक्षी सिंह 3185
उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में संघर्षरत स्त्री–पारोमिता दास 3189
सूचना प्रौद्योगिकी से बदलता ग्रामीण जीवन–डॉ० दयाशंकर सिंह यादव 3192
पर्यावरण शिक्षा: पर्यावरण एवं जीवन की गुणवत्ता–डॉ० अजय कुमार सिंह 3196
जनजातीय कला की लोकाभिव्यक्ति–मधु शर्मा 3201
लोक कला में आधुनिकता: कलाकार बी० प्रभा–डॉ० सुनीता शर्मा 3206
माध्यमिक स्तर पर अल्पसंख्यक विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन –मोहम्मद आसिफ 3209
मध्यप्रांत में व्यक्तिगत सत्याग्रह के विरूद्ध सरकारी नीति–डॉ० देवेश शर्मा 3212
प्रजातंत्रिय प्रणाली एवं मानवाधिकार–डॉ० मंजु कुमारी 3216
जनजातीय विकास एवं अनुसूचित क्षेत्रों का अध्ययन–डॉ० उमेश कुमार 3219
फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में राजनीतिक चेतना का प्रभाव–उमाकान्त कुमार 3221
भारतीय संविधान के मूल कर्त्तव्य: आवश्यकता व उपादेयता–डॉ० रूचि मिश्रा 3225
संविधानिक मौलिक अधिकारोंकी भारत में स्थिती - एक राजनीतिक अध्ययन–प्रा० डॉ० शशिकांत ज० चवरे 3228
पर्यावरण अधिकार–डॉ० स्वाती विकासराव कुरमे 3239
समाज मे नारी उत्पीड़न के अनुपात का विश्लेषणात्मक अध्ययन–प्रा० डॉ० एल०जी० पाटील 3242
बाल मजदूरी : मानवाधिकारों के समक्ष गंभीर चुनौती–डॉ० रिता धांडेकर 3245
रोहतास जिला में जनसंख्या वृद्धि एवं वितरण का भौगोलिक अध्ययन–बोलेंद्र कुमार अगम 3248
प्रेम, पलायन और शिल्पी जिजीविषा का त्रिकोण : कोणार्क–डॉ० अम्बुज कुमार पाण्डेय 3254
हाईब्रिड पुस्तकालय के द्वारा ई-सूचना संसाधनों को प्राप्त करने के स्त्रोत एक अध्ययन–भुलेश्वरी साहू; धनकुमार महिलांग; डॉ० रामानंद मालवीय 3256
भूगोल तथा सतत विकास के लक्ष्य (एसडीजी)–डॉ० अनुपमा सिंह 3260
भारत में जनसंख्या वृद्धि: समस्या एवं समाधान–रमेश कुमार प्रजापति 3265
राजस्थान में अधिकारों व प्रस्थिति में लैगिंक असमानताएँ: एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० सृष्टि राज सिंह चुण्डावत 3270
ट्रांसजेण्डर व्यक्तियों के विधिक अधिकारों का अध्ययन–सत्येन्द्र सिंह 3276
जनजातीय विद्यार्थियों की मानचित्र के प्रति समझ का अध्ययन–डॉ० फरजाना इरफान; मीना पुर्बिया 3281
फीजीमें हिंदी साहित्य सृजन–डॉ० अलका द्विवेदी; शीला 3284
रहस्यवाद और महादेवी वर्मा–डॉ० हरिश्चन्द्र अग्रहरि 3289
चीनी बौद्ध साहित्य के विकास में दाओ-एन की भूमिका–अपर्णा इड़ा श्री 3291
महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन–डॉ० शिवराज कुमार 3295
भारत में लड़कियों की शिक्षा व सरकारी योजनाएं: स्थिति और चुनौतियाँ–रंजु प्रजापति; डॉ० रजनी दीवाकरराव शिवनकर 3301
हिंदी दलित काव्य में अस्मिता की चेतना–डॉ० रानी अग्रवाल; निशा मिश्रा 3306
गैर-कुदरती पाकिस्तानों की पड़ताल: 'कितने पाकिस्तान'–चेतना मौर्य 3309
माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में उच्च स्तरीय चिन्तन कौशल का अध्ययन करना–डॉ० अमी राठौड़; श्रीमती राखी जीनगर 3312

संगीत के प्रचार-प्रसार में मीडिया की भूमिका–डॉ० संगीता गोरंग 3317
आधुनिक भारत में ग्राम्य विकास–रघु यादव 3320
प्राचीन काल से ब्रिटिश शासन काल तक पंचायतीराज व्यवथा का स्वरुप–डॉ० उत्कर्ष उपाध्याय 3323
भारत में पंचायती राज-व्यवस्था का राजनीतिक आयाम: एक सामान्य अवलोकन–मदेश कुमार तिवारी 3326
समृद्धिकाल के रूप में स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत-साहित्य-रचनाधर्मिता का मूल्याङ्कन–डॉ० अनिल प्रताप गिरि 3330
महिला सशक्तिकरण और स्वयं सहायता समूह–श्रीमती कविता; डॉ० प्रमिला श्रीवास्तव 3336
लोकनीति में सभारञ्जनशतक की ज्ञानमीमांसा–नीलम कुमारी; डॉ० योगिता मकवाना 3340
दौसा जिले के कृषि तंत्र पर उर्वरकों का प्रभाव: एक भौगोलिक अध्ययन–नवल किशोर साँवरिया; डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 3344
मध्य हिमालय के भोटिया जनजाति समाज का ऐतिहासिक अध्ययन: खम्पा समाज के विशेष संदर्भ में–डॉ० शिवानी रावत; अजय सिंह खम्पा 3350
स्त्री चेतना के संदर्भ में साठोत्तरी महिला कथाकार–डॉ० रानी अग्रवाल; कंचन लता गंगवार 3354
जाखम नहर परियोजना से धरियावद तहसील में मीणा जनजातीय के सामाजिक-आर्थिक स्थिति में बदलाव (एक भौगोलिक अध्ययन) –डॉ० देवेन्दर कौर; विकास कुमार डूंगरवाल 3357
गोजरी लोकसंगीत का जम्मूकश्मीर पर: एक अध्ययन–अनीता शर्मा 3361
कालिदाससाहित्ये राष्ट्रियभावना–प्रो. प्रसूनदत्तसिंह: 3365
जैनदर्शन की तत्त्व चिन्तन परम्परा में अन्तर्निहित दु:ख-निवृत्ति तथा मोक्ष की अवधारणा–डॉ० वन्दना रूहेला; योगेन्द्र सिंह सैनी 3368
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में किसानो की भूमिका–डॉ० राकेश कुमार यादव 3371
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में उपलब्धि के संदर्भ में वी-चित्रण आधारित शिक्षण व्यूह रचना की प्रभावशीलता: एक प्रयोगात्मक अध्ययन–डॉ० सरोज बाला; सुशील कुमार 3374
रायपुर जिले के किन्नरों की आर्थिक स्थिति पर कोविड-19 का प्रभाव–डॉ० हंसा शुक्ला; डॉ० रवीश कुमार सोनी; ए० शषांक राव 3380
विश्वविद्यालयीन पुस्तकालयों में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की स्थिति और उसका प्रभाव–चन्द्रसेन जांगड़े; डी०वी० सिंह 3385
'नाला सोपारा' व 'यमदीप' में मानवीय मूल्य–सोनू बाला 3388
संयुक्त प्रांत में दलित आंदोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्ता व उनके विचार–अरुणेश कुमार 3395
कानपुर महानगर में ठोस अपशिष्ट एवं मानव स्वास्थ्य–उमा प्रसाद; डॉ० साधना रानी 3391
संयुक्त प्रांत में दलित आंदोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्ता व उनके विचार–अरुणेश कुमार 3395
गाँधीवाद बनाम समाजवाद - एक समीक्षा–ओमप्रकाश कुमार 3400
आर्थिक आरक्षण का संवैधानिक अध्ययन: संविधान के 'मूलभूत ढाँचे के सिद्धान्त' के संदर्भ में–डॉ० शिव शंकर सिंह; चन्द्र भूषण मिश्र 3403
श्री रामचरित मानस की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिदृश्य की प्रासंगिकता–अग्निवेश पाण्डेय 3408
श्वेत बटन मशरूम उत्पादन तकनीक–डॉ० निलिमा दुबे 3411
चीन के विस्तारवादी कुत्सित षड्यंत्रों से व्युत्पन्न भारत की सुरक्षा चुनौतियां एवं रणनीतिक प्रतिकार–डॉ० आर० वी० सिंह बघेल 3414
महिलाओं पर होने वाली घरेलू हिंसा के कारण व निवारण–जितेन्द्र कुमार 3417
विज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा वैज्ञानिक प्रगति के मूल्य का स्वरुप–डॉ० आभा त्रिपाठी 3422
शिक्षा का अधिकार 2009 के तहत अध्ययनरत विद्यार्थियों की आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति का अध्ययन–ज्योतिबाला राय 3429
हिन्दी भाषा की पाठ्य-पुस्तकों में सम्मिलित मानव-मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–राकेश कुमार राजभर; डॉ० सोमू सिंह 3437
वैदिक कृषि विषयक चिन्तन–डॉ० अरूणिमा 3437
गिरीडीह जिला में कृषि विकास के समस्याएं, सामाधान व संभावनाओं का अध्ययन–संजय कुमार सुमन; डॉ० लाल आर० के० नाथ शाहदेव 3441
पर्यावरण प्रदूषण–मोनिका 3446
गुरू घासीदास का सतनाम आन्दोलन और सामाजिक समानता–डॉ० हेमन्तपाल घृतलहरे 3449

गुरू घासीदास का सतनाम आन्दोलन और सामाजिक समानता

डॉ० हेमन्तपाल घृतलहरे

सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय महाविद्यालय सनावल, जिला-बलरामपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ राज्य अस्तित्व में आने के पूर्व मध्यप्रदेश का हिस्सा था, पूर्व में महाराष्ट्र में शामिल था और आजादी के पूर्व मध्यभारत या मध्य प्रान्त (Central Provinces) के अंतर्गत आता था। इसे कोसल, दक्षिण कोसल आदि नामों से भी जाना जाता था। हालांकि इसके नामकरण के सम्बन्ध में मतभिन्नताएँ हैं पर इस क्षेत्र में 36 गढ़ों की उपस्थिति के कारण छत्तीसगढ़ नाम पड़ा यह तर्क सत्य के अधिक निकट माना गया है।(1) प्राचीन ग्रंथों के अनुसार इसे महाकांतर तथा दण्डकारण्य भी कहा गया है।(2) हालांकि तब छत्तीसगढ़ का भौगोलिक व राजनैतिक स्वरूप उस तरह से चिन्हित नहीं था जैसा आज है। छत्तीसगढ़ सघन वन क्षेत्र था जिसमें रतनपुर राज्य में 18 गढ़ तथा रायपुर राज्य में 18 गढ़ कुल 36 गढ़ प्रमुख गढ़ माने जाते हैं। कभी इसकी राजधानी सिरपुर भी रही ऐसी मान्यता है। इस क्षेत्र का नाम छत्तीसगढ़ के रूप में प्रचलन में कब आया? इसका जवाब देते हुए डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा एवं डॉ. अभिलाषा शर्मा ने माना है कि छत्तीसगढ़ नाम आधुनिक युग की देन है और अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक इसका नाम छत्तीसगढ़ प्रचलित हो चुका था।(3)

यह अठारहवीं शताब्दी का समय भारत ही नहीं अपितु समूचे विश्व के लिए अविस्मरणीय काल था। इस काल में काल की दशा और दिशा को बदल देने वाली हस्तियों ने जन्म लिया। तत्कालीन मध्य भारत में वर्तमान जिला-बलौदाबाजार के अन्तर्गत वन्यग्राम गिरौद में मंहगूदास और अमरौतिन के पुत्र के रूप में एक तेजस्वी बालक ने जन्म लिया जिसे पूरा विश्व आज संत गुरू घासीदास के नाम से जानता, मानता और पहचानता है। अधिकांश विद्वानों ने गुरू घासीदास का जन्म 18 दिसम्बर सन् 1756 ई. को स्वीकार किया है।(4) इसी दिन उनकी जयंती भी मनाई जाती है। गुरू घासीदास ने सतनाम का सन्देश दिया और प्रतीक के रूप में जैतखाम दिया है। इसी जैतखाम में उनके जयंती (18 दिसम्बर) के पर्व पर सादा झण्डा फहराया जाता है जिसे पालो चढ़ाना भी कहते हैं। गुरू घासीदास के जन्म काल (1756 ई.) के समय ही छत्तीसगढ़ में पुराने शासकों का अस्तित्व समाप्त हो रहा था और सन् 1758 ई. में भोंसला राजकुमार बिम्बाजी ने प्रथम मराठा शासक के रूप में (छत्तीसगढ़ में) प्रत्यक्ष शासन स्थापित किया।(5) रघुनाथ सिंह से विश्वासघात करने वाले मोहन सिंह (1746-1758) की मृत्यु के साथ कलचुरि वंश का अंत हो गया था इसे डॉ. हीरालाल शुक्ल के शब्दों में समझना उचित होगा - ''सूर्योदय के साथ अंध कार की मृत्यु स्वाभाविक है। घासीदास के जन्म के साथ एक विश्वासघाती की मृत्यु भविष्य का पूर्वाभास देती है।''(6) बिम्बाजी भोंसला के बाद छत्तीसगढ़ के प्रशासन के लिए सूबेदारों की नियुक्ति नागपुर से होने लगी और छत्तीसगढ़ नागपुर का एक सूबा (1788-1818) बन गया।(7) ये मराठे बहुत निर्दयी थे और छत्तीसगढ़ अंचल में बहुत बदनाम थे इतना ही नहीं ये धन के इतने लालची थे कि जो कोई ज्यादा बोली लगाता उसे जमींदारी बेच देते थे।(8) मराठों का काल लूट-खसोट का काल था। मराठों के आतंक के बाद 1806 ई. में छत्तीसगढ़ में पिण्डारियों की लूट-खसोट प्रारंभ हुई। छ.ग. में मराठा सूबेदारों का प्रशासन 1787 से 1818 तक 31 वर्षो तक था। मराठा सरकार में ईमानदारी, एकता, वफादारी का अभाव था साथ ही ये एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों से साँठगाँठ भी कर लेते थे। पूरा देश संदेह और अनिश्चय से भर गया था। इसी समय गोंड़ जमीदारियों से मराठों को चुनौतियाँ मिल रही थी, शायद इसीलिए सोनाखान के बिंझवारों का आतंक पूरे छत्तीसगढ़ में बहुत अधिक बढ़ गया था।(9) ऐसे अस्थिरता के युग में गुरू घासीदास हमारे बीच आये। मुगल, मराठा फिर पेशवाओं का शासन आया, ब्रिटिश हुकूमत भी इस क्षेत्र में रही पर किसी ने भी शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर ध्यान नहीं दिया। समाज के बीच जाति धर्म की गहरी खाई चौड़ी होती चली गई थी। वर्ण व्यवस्था का घृणित रूप सामने आ चुका था।

वैदिक युग से लेकर आज तक शासक चाहे जो भी रहे हों, पर हिन्दू समाज की व्यवस्था मनुस्मृति के अनुसार ही रही। हिन्दू समाज के लिए मनुस्मृति ही संविधान स्वरूप था। स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण के पूर्व तक हिन्दू जाति व्यवस्था का रूप अत्यंत निंदित व घृणित रहा है। आदिवासियों को वानर, भालू, मृग, गिद्ध आदि पशुओं की उपहास जनक संज्ञा दी जाती रही और दलित जातियाँ अपवित्रता कारक मानी जाती रही।(10) तत्कालीन भारत में हिन्दू के अलावा जैन, बौद्ध, सिक्ख, इस्लाम एवं ईसाई धर्म के अनुयायी भी थे। धमन्तिरण भी एक बड़ा मुद्दा था। हिन्दू-मुसलमान व ईसाई के बीच वैमनस्य का एक बड़ा कारण धार्मिक कट्टरता व धर्मान्तरण ही था। दूसरी ओर हिन्दू समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूर्द्र चार वर्णो का विभाजन जन्म आधारित हो चुका था जिसमें पैतृक व्यवसाय की बाध्यता थी और यही आजीविका, पहचान व सम्मान का आधार था। वर्ण व्यवस्था में शूद्र निम्नतम स्तर के थे और इनका कार्य अपने से ऊपर के तीन वर्ण के लोगों की सेवा करना था। शूद्र वर्ण में भी दो वर्ग थे अछूत और सछूत। भारत की विशाल जनसंख्या इस शूद्रत्व की शिकार थी।

शूद्र के संबंध में डॉ. सुशीला टाकभौरे लिखती है कि वे (शूद्र) छिन्न-भिन्न हुए, भागे हुए लोग थे, वे पराजित थे, वे शारीरिक श्रम करते थे, दीन-हीन अवस्था में रहते थे। शूद्र शब्द की उत्पत्ति अनुमानतः क्षुद्र से मानी गई है जिसका अर्थ छोटा या हीन होता है।(11)

शूद्र जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में बाबा साहेब डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर ने अंग्रेजी में "Who were the shudras" एवं हिन्दी में 'शूद्रों की खोज' शीर्षक से पुस्तकें लिखीं। इस पुस्तक में उन्होंने दो प्रश्न उठाये- (1) शूद्र कौन है? (2) आर्यो का चौथा वर्ण कैसे बना? और डॉ. अम्बेडकर ने अपने प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार दिए हैं -[12]

(1) शूद्र आर्यो की जाति में सूर्यवंशी है

(2) किसी समय आर्य जाति में केवल तीन ही वर्ण थे अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य

(3) शूद्रों का चौथा वर्ण नहीं था। वे भारतीय राजाओं के क्षत्रिय वर्ण के वंशज थे।

(4) शूद्रों और ब्राह्मणों में बराबर लड़ाई रही और ब्राह्मणों पर शूद्रों ने बहुत अत्याचार किये।

(5) ब्राह्मणों ने शूद्रों के अत्याचार से तंग आकर द्वेष भाव के कारण शूद्रों का उपनयन करना बंद कर दिया

(6) उपनयन न होने से शूद्र क्षत्रियत्व से गिरकर वैश्य वर्ण के नीचे एक चौथा वर्ण बन गये।

चाहे शूद्रों की उत्पत्ति किसी भी तरह से हुई हो, परन्तु यह सत्य है कि सामाजिक रूप से वे सदियो से भेदभाव के शिकार रहे हैं और उनकी सामाजिक व आर्थिक प्रस्थिति दयनीय है।

शूद्रों का पतन कैसे हुआ इसकी पड़ताल करते हुए डॉ. भीमराव अम्बेडकर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जब सबको उपनयन का अधिकार प्राप्त था, तब उसका महत्व सामाजिक नहीं था लेकिन जब शूद्रों से यह अधिकार छिन गया तब उपनयन श्रेष्ठता की निशानी समझा जाने लगा और शूद्र व अन्य तीन वर्णो के बीच श्रेष्ठ व नीच की मान्यता विकसित हुई। डॉ. अम्बेडकर आगे निष्कर्ष देते हैं कि उपनयन केवल ब्राह्मण करा सकता है, ब्राह्मण समाज की आज्ञा के बिना उपनयन करावे तो दण्ड का भागी होगा, सम्पत्ति रखने का अधिकार उसी को है जिसे यज्ञ करने का अधिकार है और यज्ञ वही कर सकता है जिसका उपनयन हुआ हो, इसी तरह वेद-पाठ अर्थात ज्ञान का अधिकारी वही है जिसका उपनयन हुआ हो। चूँकि शूद्र का उपनयन नहीं हो सकता अत: वह विद्या और धन दोनों प्राप्त नहीं कर सके।[13] यह निष्कर्ष इस बात को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आखिर समाज में ऊँच-नीच व भेदभाव क्यों और कैसे जन्म लेता है? एक उपनयन का अनधिकार कितना बड़ा घातक हथियार बन गया। कालान्तर में शूद्रों की हजारों जातियाँ और उपजातियाँ बना दी गई। वास्तव में समस्या इसी जातिवाद की है। यह सारी सामाजिक भेदभाव व असमानता की जड़ है।

जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भी कुछ विद्वानों का मत है कि जाति शब्द भी वह नहीं है जिस रूप में आज प्रयुक्त होता है। जाति मूलत: समूह से अभिप्रेरित है। प्रत्येक समूह की उत्पत्ति, रीति-रिवाज और कुल-देवता पृथक-पृथक थे। जाति पारिवारिक व्यवसाय से सम्बद्ध हो सकती है किन्तु इसमें ऊँच-नीच की घृणा न थी।[14] ऊँच-नीच की घृणा हिन्दू सामाजिक व्यवस्था की देन है जो बहुत बाद में आरोपित की गई और वह भी ऊँच-नीच के क्रमोत्तर रूप में ताकि शासित जातियाँ आपस में ही एक-दूसरे से घृणा करती रहें।[15] जबकि उच्च वर्ण में निम्न वर्ण जैसी कोई जातियाँ अस्तित्व में नहीं हैं। यह जाति विभाजन शूद्रों को आपस में लड़ाये रखने और फूट डालकर राज करते रहने की रणनीति थी जो बेहद सफल हुई। इस व्यवस्था को लागू करवाने में मनुस्मृति एवं अन्य धार्मिक ग्रंथों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही। मनुस्मृति के कुछ उदाहरण[16] द्रस्टव्य हैं - शूद्रों के हाथ का अन्न-पानी ग्रहण करना ध र्म के विपरीत है। ब्राह्मण को कठोर वचन कहने पर शूद्र को प्राण दण्ड दिया जाये।

यदि शूद्र अभिमान से द्विजातियों को धर्म का उपदेश करे तो राजा उसके मुख और कानों में तपाया हुआ (गर्म) तेल डाले (मनुस्मृति- 8/270-272)। शूद्र जिस अंग से द्विजाति को मारे, राजा उसका वही अंग कटवा दे (मनुस्मृति- 8/278-280)। यदि शूद्र ब्राह्मण के साथ एक आसन पर बैठना चाहे तो राजा उसकी कमर पर दगवा कर उसके देश से निकलवा दे या उसके चूतड कटवा दे (मनुस्मृति-8/281)। ब्राह्मण शूद्र की सम्पत्ति को बिना संकोच ले सकता है, क्योंकि वह किसी सम्पत्ति का मालिक नहीं होता। जो कुछ उसके पास है, वह उसके स्वामी का है (मनुस्मृति-8/417)।

क्षत्रिय ब्राह्मण को गाली दे तो 100 पण दण्ड दे, वैश्य ब्राह्मण को गाली दे तो 150 या 200 पण दण्ड दे, परन्तु शूद्र को प्राणदण्ड होना चाहिए (मनुस्मृति-8/267-268)। मनुस्मृति में ऐसे हजारों उदारहण हैं। जहाँ भेदभावपूर्ण न्याय का विधान रचा गया है। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने कथक संहिता, शतपथ ब्राह्मण, मैत्रयानी संहिता, पंचविश ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण, आपस्तम्ब धर्मसूत्र, वशिष्ठ धर्मसूत्र, विष्णु स्मृति, गौतम धर्मसूत्र, बृहस्पति धर्मसत्र, नारद स्मृति आदि में उल्लेखित भेदभावपूर्ण नियमों को भी अपनी पुस्तक शूद्रों को खोज[17] में सप्रमाण उद्धृत किया है। यहाँ सबका उदाहरण दिया जाना न तो संभव है, न ही आवश्यक। उपरोक्त उदाहरण संकेतमात्र हैं कि भेदभावपूर्ण अमानवीय व्यवहार था और सामाजिक असमानता थी यह समझ में आ सके।

इस सामाजिक असमानता और अमानवीय व्यवस्था (जातिवाद) के विरोध में जैनधर्म, बौद्ध धर्म, सिक्ख धर्म खड़े हुए। गौतम बुद्ध की शिक्षाएँ, सिद्ध, नाथ एवं संत साहित्य की विचारधारा इसके विरोध में रही और समतामूलक समाज की इन्होंने कल्पना की। हालाँकि सत्तावर्ग जातिवादी और प्रजा शोषित (शिकार) बना रहा और परिवर्तन की कोशिशें पत्थरों से सिर टकराने जैसी रहीं। फिर भी प्रयास निरंतर होते रहे।

यहाँ दुष्यन्त कुमार की एक गजल [18] याद आती है-

पक गई है आदतें, बातों से सर होंगी नहीं,
कोई हंगामा करो, ऐसे गुजर होगी नहीं।
इन ठिठुरती उँगलियों को इस लपट पर सेंक लो,
धूप अब घर की किसी दीवार पर होगी नहीं।
बूँद टपकी थी मगर वो बूँदो-बारिश और है,
ऐसी बारिश की कभी उनको खबर होगी नहीं।

आज मेरा साथ दो, वैसे मुझे मालूम है,

पत्थरों में चीख हरगिज कारगर होगी नहीं।

फिर भी पत्थरों (अमानवीय व्यवस्था) के बीच चीख (मानवतावादी स्वर) निरन्तर सुनाई देते रहे। शूद्रों की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति अच्छी नहीं थी, उनके लिये न्याय और सम्मान का कोई विधान प्रावधान दूर-दूर तक दिखाई नहीं पड़ता। ऐसी परिस्थितियों के बीच मानवतावादी संत महापुरूषों की विचारधारा समाज में एक नई चेतना का संचार करती दिखाई पड़ती है। यह दलित शोषित, वंचित, पीड़ित वर्ग की पीडाको अभिव्यक्त करती हुई जब उसकी अस्मिता को तलाश करने लगी तब साहित्य में यह धारा दलित साहित्य के रूप में सामने आयी। दलित साहित्य यानी वंचित वर्ग का अथवा दलित चेतना और दलित सरोकारों का साहित्य।

ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित चेतना का सम्बन्ध दृष्टि से जोड़ते हैं। उनका कहना है दलित यानी हजारों साल से शोषित, प्रताड़ित, सामाजिक और धार्मिक विद्वेष से नारकीय जीवन जीने के लिए बाध्य किया गया, मानवीय अधिकारों से वंचित, वर्ण-व्यवस्था में सबसे नीची पायदान पर खडा, अस्पृश्य, अन्त्यज, पंचम कहे जाने वाले व्यक्ति को चेतना यानी दलित चेतना।[19] और इस दलित चेतना का उद्भव डॉ. अम्बेडकर के मुक्ति-संघर्ष से विकसित हुआ माना जाता है।[20] यह सच भी है कि डॉ. अम्बेडकर और ज्योतिबा फूले के विचारों से दलित चिंतन को एक निश्चित धरातलीय आकार प्राप्त होता है, परन्तु इसकी शुरूआत सुदूर अतीत में ही हो चुकी थी।

सुशीला टाकभौरे मानती है कि उत्तर वैदिक काल के कर्मकाण्ड व धार्मिक आडम्बर के साथ सामाजिक भेदभाव वैदिक धर्म की सबसे बड़ी बुराई बन गये थे जिसके विरोध व विकल्प के रूप में ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी में बौद्ध और जैन धर्म का उदय हुआ। इन धर्मों में जातिवाद व असमानता को स्थान नहीं था।[21] शायद यही कारण था कि बौद्ध धर्म काफी लोकप्रिय हुआ और आगे चलकर समूचे एशिया में फैल गया। बुद्ध ने जातिवाद की जड़ों को हिलाकर रख दिया। बौद्ध धर्म जब आगे चलकर कई रूपों व शाखाओं में बढ़ा वहाँपर भी सिद्ध एवं नाथ साहित्य में क्रमश: यह विचार धारा प्रसारित होती दीख पड़ती है जो संत साहित्य का आधार बनी। हिन्दू धर्म के जातिवाद, छुआछूत, भाग्य और भगवान, अवतारवाद, स्वर्ग-नर्क, वेदशास्त्र, कर्मकाण्ड एवं मान्यताओं को ये चुनौती पर चुनौती दे रहे थे। बुद्ध ने अपने मार्ग सबके लिए समान रूप से खोल दिए जो कि वर्ण व्यवस्था के सर्वथा विपरीत कार्य था। सिद्ध साहित्य बतलाता है कि उन्होंने बाह्य आडम्बरों का खंडन किया है- जहणग्गाविअ होई मुत्ति, ता सुणह सियालह[22] (अर्थात नग्न रहने से मुक्ति मिल जाती तो कुत्ते और सियार भी मोक्ष के अधिकारी बन गए होते) यही संदेश कबीर की वाणियों में इस तरह से आया-

मूंड़ मुड़ाए हरि मिले, तो सब कोई लेत मुड़ाय।

बार-बार के मूंड़ते, भेंड़ न बैकुंठ जाय।।

इसी तरह सिद्ध सरहपा ने शास्त्रार्थ (कोरा शास्त्रज्ञान) को मरूस्थल माना है-

बहुसात्थात्थ मरूत्थालिहिं, तिसिअ मरिब्बो तेहिं [23]

कबीर तक आकर इसका स्वरूप निम्न रूप में प्रकट हुआ है-

पोथी पढिघ्-पढिघ् जग मुआ, पंडित भया न कोय

ढाई आखर प्रेम का, पढे सो पंडित होय

नाथ संप्रदाय के प्रमुख गोरखनाथ बाह्य आडम्बरों का विरोध करते हुए कहते हैं-

दूधाधारी पर धरि चित्त, नागा लकड़ी चाहे नित्त।

मौनी कसै मयंत्र की आस, बिनु गुर गुदड़ी नहीं बेसास। [24]

इसी तरह नाथों ने वेदशास्त्र के अध्ययन को ही व्यर्थ करार दिया है-

योगशास्त्र पढेन्नित्यं किमन्यै: शास्त्रं विस्तरै:[25]

इसके अलावा इन संप्रदायों में जातिवाद एवं छुआछूत का विरोध भी देखने को मिलता है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते है तो पाते हैं कि आगे के संतो कवियों ने न केवल जातिवादी व्यवस्था का विरोध किया है बल्कि आदर्श राज्य (समतामूलक समाज) की संकल्पना भी उन्होंने विकसित की है। संत रैदास कहते हैं-

ऐसा चाहूँ राज मैं जहाँ मिले सबन को अन्न

छोट-बड़ो सब सम बसै तब रैदास प्रसन्न

(अर्थात जहाँ सबके मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो तथा छोटे-बड़े सभी समानता का व्यवहार करते हों, ऐसे समतामूलक समाज के निर्माण से प्रसन्नता आएगी) संत रैदास महान क्रांतिकारी संत हैं। उनके समय में सामन्ती व्यवस्था, धार्मिक कट्टरता, वर्ण व्यवस्था, जातिवार, छुआछूत, स्त्रीशोषण आदि चरम पर थे। बावजूद इसके उन विपरीत और विषम परिस्थितियों में भी उनकी आँखों में आदर्श सामाजिक व्यवस्था वाले आदर्श राज्य की संकल्पना थी। उन्होंने 'बेगमपुरा' की यूटोपिया दी-

''अब हम खूब वतन घर पाया, ऊँचा खेर सदा मन भाया

बेगमपुरा सहर का नाऊँ, दु:ख अंदेस नहीं तिहिं ठाऊँ

कह रैदास खलास चमारा, जो उस सहर सों मीत हमारा।''[26]

इस यूटोपिया को कबीर ने भी स्वीकार किया-

अवधू बेगम देस हमारा

राजा रंक फकीर बादसा सबसे कहौ पुकारा

(जहाँ राजा-रंक, फकीर-बादशाह सभी बराबर हैं)

क्बीर की संकल्पना का समाज वर्ण विहीन, वर्ग विहीन, समतावादी समाज है-

''हम वासी उस देश के जहाँ बारह मास विलास।

प्रेम झरे विकसे कंवल, तेज पुंज परकास।।

हम वासी उस देश के जहाँ जाति बरन कुल नाहिं।

सबद मिलावा होय रहा, देह मिलावा नाहिं।। (27)

रहीम (कवि) ने जातिवाद का खण्डन तो नहीं किया लेकिन ऐसी राजसत्ता (व्यवस्था) की कल्पना की है जो जनता को दु:ख देने वाली न होकर संरक्षण व सहयोग देने वाली हो-

''रहिमन राज सराहिए, ससि सम सुखद जु होई।

क्हा बापुरो भानु है तप्यौ तरैयनि खोई।।'' (28)

इसी क्रम में जाति और जातिवादी व्यवस्था पर इन संतो की वाणी हथौड़े से भी ज्यादा चोट करती है। मूर्तिपूजा का विरोध करते हुए कबीर कहते हैं-''पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार'' वहीं जन्मना श्रेष्ठता पर सवाल उठाते हुए कहते हैं कि हमरे कैसे लोहू तुम्हरे कैसे दूध, तुम कैसे बांभन पांडे हम कैसे सूद और ''जो तू बांभन बम्हनी जाया, आन राह काहे नहीं आया'' की ललकार क्या जाति की श्रेष्ठता की नींव नहीं हिला देती? मध्यकाल के संत पलटू की पंक्तियाँ भी द्रष्टव्य है-

''पाप कै मोटरी बाम्हन भाई

इन सबही जग को बगदाई'' (29)

ब्राह्मणवाद पर पलटू का तीखास्वर बिल्कुल धारदार है-

''भलि मति हरल तुम्हार पांडे बम्हना

सब जातिन में उत्तम तुमही, करतब करौ कसाई

जीव मारि कै काया पोखौ, तनिकौ दरद न आई

बकरी भेड़ा महवरी खायौ काहे गाया बराई

रूधिर मांस सब एकै पांडे, थू तेरी बम्हनाई'' (30)

वर्ण,जाति के शिखर पर बैठे ब्राह्मणों को चुनौती देती धिक्कार भरी भाषा का साहस और चमत्कार सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन के लिए ही तो है।

यह मानवतावादी स्वर अठारहवीं शताब्दी में गुरू घासीदास तक आते-आते एक पूर्ण क्रांतिकारी नारे - ''मानव मानव एक समान के रूप में प्रकट हुआ है। वे कहते हैं- ''मनखे चाहे करिया हो, के गोरिया हो, ए पार के हो, के ओ पार के हो, मनखे-मनखे आय'' (अर्थात मनुष्य चाहे काला हो या गोरा हो, इस देश का हो या उस देश का हो, मनुष्य केवल मनुष्य है) उसमें तात्विक रूप से कोई भेद नहीं है।(31) इसी से उन्होंने मनखे-मनखे एक बरोबर का उद्घोष भी किया है। वे जानते थे कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, जैन, सिक्ख, ईसाई सब मानव निर्मित व्यवस्था है और इससे मानव के प्राकृतिक (वास्तविक) स्वरूप में कोई अन्तर नहीं होता। सामाजिक पतन का मुख्य कारण यह मानव-मानव के बीच का भेदभाव ही था। गुरू घासीदास ने इसे गहराई से महसूस किया था अत: वे मानव को सारे भेद एवं बंधनों से मुक्त करना चाहते थे।(32) उन्होंने वर्णविहीन एवं वर्गविहीन जिस समतामूलक समाज की संकल्पना की उसे सतलोक व अमरलोक कहकर पुकारा है।

गुरू घासीदास चेतना की परम ऊँचाई पर स्थित एक सम्बुद्ध व्यक्ति थे, समर्थ गुरू थे। वे सतनाम के संदेश से मध्य भारत को जगाते रहे। अपने शोध प्रबंध में डॉ. घृतलहरे(33) इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि गुरू घासीदास का जन्म 18 दिसम्बर 1756 ई. को हुआ लगभग 36 वर्ष की आयु में 1792 ई. में उन्हें तपोभूमि (औंरा-धौंरा वृक्ष के नीचे) में आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई, पुनश्च वे 6 माह तक छाता पहाड़ की तलहटी में आत्मचिंतन व गहन साधना में लीन रहे। तत्पश्चात जब वे समाज के बीच लौटे तब से उनके अंतर्ध्यान होने (1850ई.) तक लगभग 58 वर्षों तक उन्होंने जनता के बीच जा-जाकर (सत्संग, प्रवचन, दीक्षा, पंथी भजन, यात्रा एवं रावटी आदि के माध्यम से) जनचेतना जाग्रत करने का काम किया। वे एक विराट नेतृत्व थे। उनका नेतृत्व बहुआयामी है। डॉ. हीरालाल शुक्ल गुरू घासीदास को सबसे ताकतवर आध्यात्मिक नेता मानते हुए लिखते हैं-'Guru Ghasidas was one of the Most powerful leaders of spiritual life in the modern times.'(34)

गुरू घासीदास का युग अंधकार का युग था, जहाँ सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व सभी क्षेत्रों में बिखराब, अलगाव, दिशाहीनता, मूल्यहीनता, चारित्रिक पतन, भेदभाव, शोषण, अन्याय व अत्याचार के अंधेरे में मानवता दम तोड़ रही थी। ऐसे समय में वे एक क्रांति सूर्य बनकर आये और मानवता का प्रकाश बगराये। वे केवल उपदेष्टा नहीं थे बल्कि जीवन.संघर्ष.भूमि के सच्चे योद्धा थे। उनका समाज पर गहरा प्रभाव हुआ। 7 सिद्धांत, 42 वाणी तो संकेत मात्र है, उनके पास तो ज्ञान अमृत का अजस्र स्रोत था। वे आदर्श चरित्र, प्रेरक, मार्गदर्शक थे। डॉ. हीरालाल शुक्ल ने उन्हें मसीहा कहा है। वे लिखते

हैं कि गुरू घासीदास एक प्राफेट (मसीहा) के रूप में अवतरित हुए थे। मसीहा उच्च स्तर की विश्वसनीयता, आधिकारिता तथा प्रामाणिकता से जुडे हुए होते हैं। वे अपने दीर्घ और गहन अनुभव से जो कुछ कहते हैं, वह लोगों के दिलों की गहराइयों तक उतरता जाता है।[35] गुरू घासीदास की वाणियों का लोकमानस पर इतना गहरा प्रभाव था तभी मध्यभारत में समतामूलक समाज की स्थापना हेतु 'सतनाम आंदोलन' घटित हो सका। अनेक विद्वान एवं अंग्रेज अधिकारियों ने इसे 1820-30 ई. की घटना माना है। परन्तु मेरी दृष्टि से सतनाम आन्दोलन का उद्‌भव वैचारिक रूप में गुरू घासीदास की सम्बोधि के बाद (1793 ई. के आसपास) से ही चिंतन के रूप में माना जाता चाहिए जो सामाजिक धरातल पर संगठित रूप से लगभग 1800 ई. के आसपास दिखने लगा और 1850 ई. तक गुरू घासीदास के नेतृत्व में चला तथा आगे उनके द्वितीय पुत्र राजागुरू बालकदास के नेतृत्व में 1860 ई. (उनकी मृत्यु) तक गतिमान होता दिखाई पड़ता है।

गुरू घासीदास अपने युग की सामाजिक विषमता से अत्यंत क्षुब्ध थे और सारा षडयंत्र समझ रहे थे। आखिरकार उन्होंने 1820 ई.में पूर्ण 'सामाजिक समानता' का नारा दिया तथा अन्याय और अत्याचार से निपटने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हो गए। भारतीय इतिहास में यह एक सबसे बड़ी उलट-पुलट थी जिससे जाति व्यवस्था का पारम्परिक ढाँचा ही लड़खड़ाने लगा।[36] उन्होंने पुरानी भेदभाव मूलक परंपराओं को तोड़कर नवीन स्वस्थ परंपराओं की नीव डाली जिसमें विषम सामाजिक व्यवस्था पलटकर समानता के धरातल पर खड़ी होने लगी। शायद इसीलिए उन्हें क्रांतिकारी संत कहा जाता है और इस आन्दोलन को सतनाम आन्दोलन की संज्ञा दी जाती है। क्रांति और आन्दोलन शब्द प्रायः विध्वंसात्मक अर्थ में लिए जाते हैं इसलिए कुछ लोग गुरू घासीदास एवं सतनाम के साथ क्रांति या आंदोलन शब्द को स्वीकारने से हिचकिचाते हैं। जबकि क्रांति या आंदोलन शब्द सृजनात्मक ढंग से भी व्यापक अर्थ देते हैं।

विकिपीडिया के अनुसार-आन्दोलन संगठित सत्ता तंत्र या व्यवस्था द्वारा शोषण और अन्याय किए जाने के बोध से उसके खिलाफ पैदा हुआ संगठित और सुनियोजित अथवा स्वतः स्फूर्त सामूहिक संघर्ष है। इसका उद्देश्य सता या व्यवस्था में सुधार या परिवर्तन होता है। यह राजनीतिक सुधारो या परिवर्तन की आकांक्षा के अलावा सामाजिक, धार्मिक, पर्यावरणीय या सांस्कृतिक लक्ष्यों को प्राप्ति के लिए भी चलाया जाता है। उदाहरण स्वरूप चिपको आंदोलन पेड़ों की रक्षा के लिए चलाया गया आंदोलन है।[37] इसी प्रकार समाजशास्त्री यह मानते हैं कि क्रांति का तात्पर्य परिवर्तन के चरम स्वरूप से है जिससे समाज और सामाजिक व्यवस्था में पूर्णतः बदलाव हो जाता है। वे कहते हैं कि जब हम सामाजिक क्रांति की बात करते हैं तो इसका तात्पर्य विद्रोह, बगावत, बलवा, तोड़-फोड़ या सैनिक बगावत, राजनीतिक विद्रोह और गदर आदि नहीं होता बल्कि सामाजिक क्रांति का अर्थ होता है परम्परागत सामाजिक व्यवस्था में होने वाले मूलभूत परिवर्तन से, जिसमें सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप परिवर्तन होकर नवीन रूप धारण कर लेता है।[38] इस अर्थ में गुरू घासीदास महान क्रांतिकारी या आंदोलनकारी संत हैं। वे उपदेश भी देते हैं और उन उपदेशों को समाज में अनुपालन भी करवा लेते हैं।

गुरू घासीदास के 7 सिद्धांत कहे जाते हैं, डॉ. घृतलहरे[39] ने वे सात सिद्धांत इस प्रकार बतलाये हैं-

(1) एक मात्र सतनाम को मानो।
(2) मूर्ति पूजा मत करो। मूर्ति पूजा ढोंग है।
(3) जाति भेद को मत मानो। मानव-मानव एक समान हैं।
(4) मांसाहार मत करो। जीव हत्या पाप है।
(5) पराई स्त्री को माता जानो।
(6) शराब एवं मादक पदार्थों का सेवन मत करो।
(7) उपरान्ह में खेतों में हलमत चलाओ।

साथ ही उनके 42 अमृतवाणियों, 27 मुक्ता एवं 18 सूक्ता का उल्लेख भी उन्होंने किया है। गुरू घासीदास की वाणियाँ जनभाषा छत्तीसगढ़ी में हैं। उनकी वाणियों में वर्ण व्यवस्था (जातिवाद) की अस्वीकार्यता, वेद शास्त्रों की अस्वीकार्यता, स्त्री का सम्मान, विधवा पुनर्विवाह, सती प्रथा का विरोध, सामंती व्यवस्था एवं बेगारी प्रथा का विरोध, जीव हिंसा का विरोध, बलि प्रथा की रोक, पर्यावरण की सुरक्षा, मानव-मानव के बीच समता, सम्मान, न्याय और प्रेम की भावना, शिक्षा (ज्ञान) का प्रचार-प्रसार, जागरूकता, जरूरतमंद लोगों की सेवा (सहायता), संगठित रहने तथा हक अधिकार के लिये संघर्ष करने की प्रेरणा है आचरण की शुद्धता और सतनाम सुमिरन पर जोर है, कर्मकाण्ड, पाखण्ड, स्वर्ग-नर्क के ढकोसलों के प्रति नकार है और समतामूलक समाज की स्थापना का उद्देश्य है। वे पुरानी सड़ी-गली मनुवादी व्यवस्था के भवसागर से 'हंसा' की मुक्ति चाहते थे। उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि विभिन्न जाति-धर्म के अनुयायियों ने 'सतनाम' की दीक्षा लेकर धर्मान्तरण अथवा मतान्तरण किया जिसमें एक जातिविहीन समूह- 'सतनामी' अस्तित्व में आया, हालांकि आज यह जातिसूचक शब्द के रूप में प्रचलित है। परन्तु इसमें अनेक जाति के लोग अपनी जाति त्यागकर समाहित हुए थे। पंथी गीत का उदाहरण देखिए-

बांभन, क्षत्रिय, बनिया शूद्र चारों बरन के लोग
तब बनिन सतनामी, टोरिन भेद-भाव के रोग ल
सफा मिटाइन ग
घासीदास गुरू बाबा पंथ ल चलाइन ग
गोंड़, कंवर, कोरी, पासी, चमरा, महरा, मोची
राउत अऊ रोहिदास, तेली, सतनाम ल सोचिन
खुलगे हृदय कपाट गा
-(मनोहर दास नृसिंह रचित)

इसी तरह से पंथी गीतों में छुआछूत का तीव्र विरोध है-

तूमन छुआछूत म जिनगी ल बिता डारा रे
पापी मूरख गँवार
जाति जानवर म जरूर
हाथी, घोड़ा अउ कुकूर
जाति रूख म जरूर
चंदन, साजा अउ बंबूर
जाति फर म जरूर
आमा अमली अउ खजूर
जाति पंछी म जरूर
सुआ, मैना अउ मंजूर
जाति होथे जी जरूर
एक नारी एक पुरूष
कइसे मनखे म जाति ल बना डारा रे
पापी मूरख गँवार

ये पंक्तियाँ मनुष्यों के बीच जाति.व्यवस्था को स्वीकार नहीं करती इसके अलावा मूर्ति पूजा, तीथयात्रा एवं मृत्यु उपरान्त पितृमोक्ष मनाने का भी निषेध किया गया है। पंथी गीतों की पंक्तियाँ जनमानस में प्रचलित हैं-

(1) मंदिरवा म का करे जइबो
अपन घट के ही देवा ल मनइबो
(2) गंगा जमुना के धारा बहे तोर काया
काहाँ तिरिथ नहाय जाबे ना
(3) जिंयत ददा ल तँय ददा नइ जाने
मरे म पिण्डा पराये
ददा कहिले रे, जींयत ले ददा कहिले

इन वाणियों को प्रभाव जनमानस पर पर्याप्त रूप से पड़ा। गुरू घासीदास ने मनुष्य के भीतर सदियों से निर्मित 'हीनग्रंथि' को पहचाना था। सदियों के संबोध न- 'तू नीच है,' 'तू हीन है,' 'तू शूद्र है,' 'तू सेवक है,' 'तू किसी सुख का अधिकारी नहीं है,' 'तेरी यह हीनता ईश्वर का तुझे दण्ड है' आदि सुनते-सुनते समाज का निम्न वर्ग हीनभावना से ग्रसित हो गया था। सामाजिक समानता के लिये इसे निकाल फेंकना पहली जरूरत थी। इसीलिए गुरू घासीदास ने कहा- 'अपने को हीन और कमजोर मत मानो'। उनकी इस वाणी से लोक में आत्मविश्वास, आत्मबल व आत्मसम्मान का संचार हुआ और पीडिघ्त समाज पूर्ण सामाजिक समानता के लिए संगठित होकर संघर्ष क्षेत्र में कूद पड़ा और इस सामाजिक क्रांति से उनके जीवन स्तर में अभूतपूर्व परिवर्तन आया।[40]

मनु से लेकर तुलसीदास तक और आगे भी राजसत्ता और धर्मसत्ता ने मिलकर जिस चक्रव्यह में स्त्री को फाँस लिया था और उसका शोषण किया जा रहा था वह निंदनीय तोथा ही अमानवीय भी था। सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, रखैल, नगरवधू, देवदासी और अनेक अमानवीय प्रथाएँ थी जिसे गुरू घासीदास और उनके अनुयायियों ने तोड़ डाला। स्त्री यदि निम्न वर्ग की हो तब तो उसके सतीत्व की रक्षा हो पाना कल्पना मात्र थी। स्त्री की इस पीडा और दयनीय दशा को गुरू घासीदास ने महसूस किया और स्त्री मुक्ति का बीड़ा उठाया। इसी कारण डॉ. घृतलहरे ने स्त्री जाति का प्रथम उद्धारक गुरू घासीदास को माना है।[41] डॉ. शंकर लाल टोडर भी मानते हैं कि गुरू घासीदास ने दृढ़ संकल्प लेकर नारी उद्धार को एक महत्वपूर्ण उद्देश्य के रूप में अपने सतनाम आंदोलन में स्थान दिया।[42] गुरू घासीदास का यह आन्दोलन किसी जाति या वर्ग तक सीमित नहीं था बल्कि अनेक जातियाँ इससे जुड़ गई थी। वे एक सच्चे समाज सुधारक की तरह सामाजिक बुराइयों को दूर कर रहे थे। टोनही के नाम से महिलाओं की हत्या, पशुबलि, नरबलि, बहुविवाह, मांस भक्षण, मदिरापान, चरित्रहीनता, सतीप्रथा, वर्ण व्यवस्था के खिलाफ यह अभूतपूर्व शंखनाद था।

इस आन्दोलन को चीशोल्म ने 'सामाजिक क्रांति' कहा, ब्रिग्स ने 'आर्थिक संघर्ष' कहा, नेल्सन और चार्ल्स ग्राण्ट ने 'धार्मिक विद्रोह' कहा।[43] अर्थात इस आंदोलन का प्रभाव जीवन के सभी क्षेत्रों में पड़ा। डॉ. हीरालाल शुक्ल (गुरू घासीदास संघर्ष, समन्वय और सिद्धान्त) तथा डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे (गुरू घासीदास के उपदेशों का दार्शनिक अनुशीलन), इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सतनाम आंदोलन एक अभूतपूर्व क्रांतिकारी घटना थी। इसने समाज में आमूलचूल परिवर्तन लाया। इस क्रांति के फलस्वरूप विभिन्न जातियों ने अपनी वर्ण व्यवस्था की जंजीरे तोड़कर सतनाम पंथ (जातिविहीन व्यवस्था) का आश्रय लिया, हीनभावना को छोड़ा। मराठों ने छत्तीसगढ़ में लोकमानस में 'राम-राम' कहकर अभिवादन करने की परंपरा डाली थी जिसे 'सतनाम' का अभिवादन देकर स्थानापन्न किया गया। मनु की व्यवस्था में शूद्र ब्राह्मण की बराबरी में नहीं बैठ सकते थे परंतु अब बैठने लगे, ऊँची जाति के लोग शूद्रों के साथ गाली-गलौच और असम्मान जनक बर्ताव करते थे जिसे शूद्रों ने सहना बंद कर दिया और 'जैसे को तैसा' व्यवहार करने लगे ऊँची जाति के लोग अक्सर निम्न जाति के

लोगों को पीटते थे लेकिन अब निम्न जाति के लोग पलटकर उन्हें पीटने लगे, क्षत्रिय जाति के लोग रौबदार मूँछें रख सकते थे परन्तु अब सतनाम की शरण में आये लोग भी ऐंठी हुई रौबदार मूँछें रखने लगे, शूद्रों को धन रखने का अधिकार न था और गुरू घासीदास ने 300 से अधिक लोगों को मालगुजार (गौटिया) बना दिया, पहले निम्न जाति के लोग कमर से ऊपर खुला रखते, जूते चप्पल भी नहीं पहन सकते थे, परंतु सतनाम आंदोलन के कारण वे कपड़ेए जूते.चप्पल आदि पहनकर ससम्मान निकलते थे, इतना ही नहीं उन्होंने अपनी बंधक जमीनें भी छुड़ा जी और सामंतों की बेगारी करना भी बंद कर दिया। सतनाम आंदोलन से विधवा पुनर्विवाह (चूड़ी पहनाने की प्रथा) प्रारंभ हुआ। पहले अछूतों के हाथ का छुआ भोजन.पानी सवर्ण ग्रहण नहीं करते थे, अब निम्न जाति के लोगों ने छुआछूत मानने वाले लोगों का छुआ लेने से इंकार कर दिया। पहले उपनयन कराने का अधिकार केवल ब्राह्मणों को था लेकिन अब सतनाम के अनुयायियों ने खुद उपनयन धारण कर लिया। पहले हिन्दू समाज के सारे संस्कार ब्राह्मण करवाते थे, परन्तु अब सतनाम के मानने वालों ने ब्राह्मण और उसकी व्यवस्था पर पूर्णतः सामाजिक प्रतिबंध लगा दिया और भंडारी साटीदार की व्यवस्था बनाई। सतनाम के अनुयायी मंदिर जाना बंद कर दिये, मूर्ति पूजा का निषेध कर घरों की सारी मूर्तियाँ बाहर फेंक आये, वेदपाठ, पितृमोक्ष, हवन व अन्य कर्मकाण्डों को पूर्णतः निषेध कर दिया। पंथी गीत-नृत्य के रूप में नई सांस्कृतिक धाराओं को जन्म दिया। जाति के आधार पर उच्च लोगों को प्रणाम करना और उनकी प्रताड़ना सहना आदि पर पूर्ण प्रतिबंध लग गया। वंचितों ने अखाडेघ में युद्धाभ्यास शुरू कर दिया।

सतनाम आंदोलन का प्रभाव था कि एक संगठन या समूह (जो कि जातिविहीन था) का निर्माण हुआ और इस संगठन (पंथ) का नियम था कि यदि किसी सतनामी को किसी दूसरी जाति का व्यक्ति मारेगा और वह सतनामी उसका प्रतिरोध नहीं करेगा तो उसे सतनामी (जाति समूह) से बहिष्कृत कर दिया जाएगा। यह बड़ी क्रांतिकारी बात थी। मजदूरी के लिये भी समय निश्चित किया गया कि अपरान्ह में (दोपहर के बाद) खेतों में हल नहीं चलाया जायेगा, अन्यथा जमींदार तो सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम लेते थे। शूद्र स्त्रियाँ गहने नहीं पहन सकती थी और राजा के अलावा कोई छत्रनहीं रख सकता था परन्तु अब इस व्यवस्था को भी रौंद डाला गया। मनुवादी व्यवस्था में पठन-पाठन का ठेकेदार ब्राह्मण होता था परन्तु अब सतनाम पंथ में गुरू सर्वोच्च था और विभिन्न जातियों के लोग जो महंत, राजमहंत आदि बनाये गये वे गुरू के ज्ञान-उपदेश का प्रचार-प्रसार करने लगे थे। इस क्रांति के फलस्वरूप लूट-खसोट करने वाले पिण्डारियों का विरोध एवं ईसाई धर्मान्तरण का विरोध भी किया गया और आचरण की शुद्धता से चेतना को शिखर तक पहुँचाने की चेष्टा हुई। साथ ही दासत्व (गुलामी) को पूर्णतः नकार दिया गया।

इस प्रकार सतनाम आन्दोलन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक असमानताओं को दूर कर समतामूलक समाज की स्थापना का आंदोलन है। भाऊराम घृतलहरे इसे एक वृहत समग्र जनक्रांति कहते हैं।[44] आज एक षड़यंत्र जारी है कि रैदास, कबीर, गुरू घासीदास जैसे महापुरूषों को किसी जाति विशेष के गुरू अथवा संत के रूप में चिन्हांकित करने का प्रयास हो रहा है। यह समझने की जरूरत है कि जातिविहीन, वर्गविहीन, वर्णविहीन, समतामूलक समाज की स्थापना करने वाले इन संतों और उनके सद्प्रयासों को किसी सीमा में बाँधकर देखा जाना अमानवीय व अन्यायपूर्ण है।

डॉ. हीरालाल शुक्ल के अनुसार- ''हमें यह स्वीकार करना होगा कि गुरू घासीदास भारतीय उपमहाद्वीप में प्रजातांत्रिक क्रांति के अग्रदूत थे।''[45] यह कथन हमें गुरू घासीदास के व्यक्तित्व और उनके सतनाम आंदोलन के मूलस्वर को एक पंक्ति में रेखांकित कर देती है। यह सतनाम आंदोलन सत्य और अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित था, वंचितों के हक व अधिकारों की प्राप्ति की भावना से था, मानवता की धरातल पर स्वतंत्र व सम्मान जनक जीवन जीने के अवसर के लिए था। इस क्रांति ने दुनिया में और क्रांतियों के द्वार खोले। सतनाम अनुयायियों ने तेलासी महासंगम (विभिन्न जातियों का सतनाम अंगीकरण करने का कार्य जो तेलासी में हुआ) में जाति का परित्याग कर सतनामी बन गए। यह जाति का परित्याग सामाजिक समानता की चरम स्थिति है। इस सतनाम आंदोलन को नई सदी में नये ढंगसे आगे बढ़ाने की जरूरत है।

संदर्भ सूची

(1) छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा, डॉ. अभिलाषा शर्मा, मित्तल एण्ड संस दिल्ली, 2008, पृष्ठ - 18 ISBN- 81-88693-27-8
(2) वही पृष्ठ - 16
(3) वही पृष्ठ - 16-18
(4) गुरू घासीदास जीवन चरित्र-राजमहन्त नम्मूराम मनहर, मार्तण्ड सिंह मनहर, खुर्सीपार भिलाई, पंचम संस्करण 2014, पृष्ठ - 39
(5) छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा, डॉ अभिलाषा शर्मा, मित्तल एण्ड संस दिल्ली, 2008, पृष्ठ - 31
(6) गुरू घासीदासः संघर्ष समन्वय और सिद्धान्त - डॉ. हीरालाला शुक्ल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 1995, पृष्ठ - 05
(7) गुरू घासीदास के उपदेशों का दार्शनिक अनुशीलन (पीएच.डी. शोध प्रबंध) - हेमन्त पाल घृतलहरे, गुरू घासीदास वि.वि. बिलासपुर 2007, पृष्ठ - 14
(8) वही, पृष्ठ - 14
(9) वही, पृष्ठ - 15
(10) वही, पृष्ठ - 22
(11) हाशिए का विमर्श - सुशीला टाकभौरे, नेहा प्रकाशन दिल्ली, 2015, पृष्ठ -19(ISBN- 978-81-88080-64-9)
(12) शूद्रों की खोज - डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर, प्रबुद्ध भारत पुस्तकालय नागपुर, 2001 प्रस्तावना पृष्ठ - सात
(13) वही, पृष्ठ - 74-75
(14) दलित चिन्तन के विविध आयाम - अ.ला. ऊके, शिल्पायन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स दिल्ली, 2012, पृष्ठ - 17 ISBN-978-81-905323-6-5
(15) वही, पृष्ठ - 17
(16) मनुस्मृति-स्वयंभुव मनु (अनुवादक-पं.बाई.एन.झा 'तूफान') अमित पाकेट बुक्स जालन्धर -8 अध्याय 4 श्लोक 218-223, अध्याय 8 श्लोक 268-269

(17) शूद्रों की खोज - डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर, प्रबुद्ध भारत पुस्तकालय नागपुर, 2011, पृष्ठ- 24-30
(18) साये में धूप - दुष्यन्त कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली (उन्नीसवॉ संस्करण छठी आवृत्ति) 2015, पृष्ठ - 15 ISBN-978-81-8361-953-0
(19) दलित साहित्य: अनुभव संघर्ष एवं यथार्थ - ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ -59 ISBN-978-81-8361-611-9
(20) वही, पृष्ठ - 59
(21) हाशिए का विमर्श-सुशीला टाकभौरे, नेहा प्रकाशन दिल्ली, 2015 पृष्ठ - 20
(22) हिन्दी साहित्य बी.ए. भाग 3 प्रश्नपत्र -2, डॉ. रामविलास गुप्ता, वीना गुप्ता, कमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ -37
(23) वही पृष्ठ - 38
(24) वही, पृष्ठ - 39
(25) वही, पृष्ठ - 40
(26) रैदास बानी - संत रैदास (संपादक-शुकदेव सिंह) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ - 44
(27) सबद विवेकी कबीर - संपादक डॉ. तेज सिंह, भावना प्रकाशन दिल्ली, 2004, पृष्ठ - 156
(28) हिन्दी संत साहित्य की परम्परा - डॉ प्रेम नारायण शुक्ल, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली, 1988, पृष्ठ - 24
(29) दलित साहित्य: एक अन्तर्यात्रा - बजरंग बिहारी तिवारी, नवारूण गाजियाबाद, 2015, पृष्ठ 36
(30) वही, पृष्ठ - 36
(31) गुरू घासीदास के उपदेशोंका दार्शनिक अनुशीलन (पीएच.डी. शोध प्रबंध) - हेमन्त पाल घृतलहरे, गुरू घासीदास वि.वि. बिलासपुर, 2007, पृष्ठ - 395
(32) वही, पृष्ठ - 395
(33) वही, पृष्ठ - 327 (पूर्ण शोध प्रबंध)
(34) Guru Ghasidas and His Satnam philosophy – H.L. Shukla, B.R. Publishing Corporation Delhi, 2004, Page - 26
(35) गुरू घासीदास: संघर्ष, समन्वय और सिद्धांत - डॉ. हीरालाल शुक्ल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 1995, पृष्ठ - 79
(36) वही, पृष्ठ - 129
(37) hi. Wikipedia.org/wiki/आंदोलन
(38) यूनीफाइड समाजशास्त्र - एम.पी. श्रीवास्तव, रामप्रसाद एण्ड संस भोपाल, पृष्ठ - 243
(39) गुरू घासीदास के उपदेशों का दार्शनिक अनुशीलन (पीएच.डी.शोध प्रबंध) - हेमन्त पाल घृतलहरे, गुरू घासीदास वि.वि. बिलासपुर, 2007, पृष्ठ - 326
(40) वही, पृष्ठ - 397
(41) साहित्य समाज और महिला सशक्तिकरण - संपादक डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे मंगलम प्रकाशन दिल्ली, 2015, पृष्ठ - 162 पैठछ- 978-93-82816-25-6
(42) सतनामी और सतनाम आन्दोलन - डॉ. शंकर लाल टोडर, पृष्ठ - 186
(43) गुरू घासीदास के आदेशों का दार्शनिक अनुशीलन (पीएच.डी. शोध प्रबंध) - हेमन्त पाल घृतलहरे, गुरू घासीदास वि.वि. बिलासपुर 2007, पृष्ठ - 447-458
(44) सतनाम: एक वृहत समग्र जनक्रांति - भाऊराम घृतलहरे, गुरू घासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रायपुर, प्रथम संस्करण
(45) गुरू घासीदास: संघर्ष समन्वय और सिद्धान्त - डॉ. हीरालाल शुक्ल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 1995, पृष्ठ - 134